mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-28 अंक-354 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

25 दिसंबर 2024 बुधवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

बुमराह से बचने ...

@ पेज 7

महाराष्ट्र में अवैध बांग्लादेशियों के खिलाफ एक्शन शुरू

देवेंद्र फडणवीस बोले- 'सरकार ने अपना रुख साफ कर दिया है'

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के विधानसभा सत्र में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने अवैध रूप से भारत में रहने वाले बांग्लादेशी नागरिकों को लेकर सरकार का रुख साफ कर दिया है। एक तरफ जहां राज्य में अवैध रूप से रहने वाले नागरिकों के लिए डिटेंशन सेंटर का निर्माण किया जाएगा तो वहीं सरकार की भूमिका है कि ऐसे सभी अवैध नागरिकों को डिपोर्ट किया जाए। इसे लेकर सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा, सरकार की भूमिका बिल्कुल साफ है। ऐसे सभी बांग्लादेशी नागरिक जो भारत में अवैध रूप से रह रहे हैं उन्हें खोजने और उन्हें डिपोर्ट करना ही सरकार की भूमिका है और हमने इस काम की शुरुआत भी कर दी है। इसी तर्ज पर बीते दिनों मुंबई, नवी मुंबई, धुले, भिवंडी और राज्य के अन्य इलाकों में पुलिस द्वारा जमकर कार्यवाही की जा रही है।

बता दें कि बीते दिनों मुंबई की कफ परेड पुलिस ने एक ऐसे बांग्लादेशी नागरिक को गिरफ्तार किया था, जो 34 साल पहले मुंबई में डंकी रूट के जरिए दाखिल हुआ था। सूत्रों ने बताया कि आरोपी बांग्लादेशी नागरिक है जो चटगांव का रहने वाला है। उसका नाम मोइन हयात बादशाह शेख साल है। महज 17 साल की उम्र में अवैध रूप से वह भारत में घुसा था। तब से वह भारत और बांग्लादेश के बीच कई बार आवाजाही कर चुका है। पुलिस ने बताया कि एंटी टेररिस्ट सेल को जानकारी मिली थी कि एक बांग्लादेशी नागरिक यहां दक्षिण मुंबई में कई साल से रह रहा है। इसके बाद डीसीपी जोन-1 प्रवीण मुंढे ने एक टीम बनाई। इस टीम ने जांच के बाद मोइन को हिरासत में ले लिया। जांच के दौरान पता चला कि आरोपी डंकी रूट से भारत आया था और इसके पास अब भारत का वोटर आईडी भी है, जिसका इस्तेमाल कर उसने लोकसभा और विधानसभा चुनावों में मतदान भी किया था।

इतना ही नहीं, शेख के पास से पुलिस को इंडिया का आधार कार्ड, पैन कार्ड, वोटर आईडी और ड्राइविंग लाइसेंस भी मिला है।

संक्षिप्त समाचार

एफिल टॉवर पर लगी आग, मचा हड़कंप

- क्रसमस डे की पूर्व संध्या पर जुटी हुई थी काफी भीड़

पेरिस (एजेंसी)। क्रिसमस डे की पूर्व संध्या पर एक बड़ी खबर सामने आ रही है। यहां फ्रांस की राजधानी पेरिस में मौजूद एफिल टॉवर पर आग लगने की सूचना सामने आई है। बताया जा रहा है कि क्रिसमस डे की पूर्व संध्या पर वहां लोगों की काफी भीड़ जुटी हुई थी। फिलहाल 1200 लोगों को निकाला गया है। मीडिया रिपोट्स के अनुसार, क्रिसमस की पूर्व संध्या पर पेरिस में एफिल टॉवर की पहली और दूसरी मंजिल के बीच आग लगने के बाद उसे खाली करा लिया

गया। अग्निशमन कर्मियों द्वारा स्थिति पर प्रतिक्रिया देते हुए लगभग 1,200 आगंतुकों को स्मारक से सुरक्षित बाहर निकाला गया। इस बीच, आग पर काबू पाने और सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आपातकालीन सेवाओं को तुरंत तैनात किया गया।

बता दें कि एफिल टॉवर पेरिस के सबसे प्रतिष्ठित स्थलों में से एक है और पर्यटकों के लिए दुनिया के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। रिपोर्ट के मुताबिक, हर दिन लगभग 15,000 से 25,000 पर्यटक एफिल टॉवर देखने आते हैं। भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने और इस वास्तुशिल्प चमत्कार को देखने के लिए पेरिस आने वाले लाखों लोगों को आश्वस्त करने के लिए अधिकारी विस्तृत जांच कर रहे हैं।

कनाडा और पनामा नहर के बाद अब ट्रंप ने फिर ग्रीनलैंड पर टेढ़ी की आंख

वेस्ट पाम बीच (एजेंसी)। अमेरिका के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए डोनाल्ड ट्रंप ने डेनमार्क से ग्रीनलैंड खरीदने के अपने आह्वान को एक बार फिर दोहराया है। अपने पहले कार्यकाल में भी उन्होंने कुछ ऐसा करने की कोशिश की थी लेकिन सफलता नहीं मिली थी। अब मित्र देशों की सूची में डेनमार्क भी शामिल हो गया है, जिनके साथ ट्रंप 20 जनवरी को पदभार ग्रहण करने से पहले ही टकराव का रुख अख्तियार कर रहे हैं।

रविवार को डेनमार्क में अपने राजदूत के नाम की घोषणा करते हुए ट्रंप ने लिखा, ''पूरी दुनिया में राष्ट्रीय सुरक्षा और स्वतंत्रता के उद्देश्य से, अमेरिका को लगता है कि ग्रीनलैंड का स्वामित्व और नियंत्रण एक परम आवश्यकता है।''
ट्रंप ने फिर से ग्रीनलैंड पर योजना बनाई है। इससे पहले उन्होंने बीते सप्ताह सुझाव दिया था कि यदि अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ने वाले पनामा जलमार्ग का उपयोग करने के लिए आवश्यक बढ़ती पोत परिवहन लागत को कम करने के लिए कुछ नहीं किया जाता है, तो उनका देश पनामा नहर पर फिर से नियंत्रण कर सकता है। वह कनाडा को 51वां अमेरिकी राज्य बनाने और कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को 'ग्रेट स्टेट ऑफ कनाडा' का 'गवर्नर' बनाने का सुझाव भी दे रहे हैं। बता दें कि, ग्रीनलैंड दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है जो अटलांटिक और आर्कटिक महासागरों के बीच स्थित है। यह 80 प्रतिशत बर्फ की चादर से ढका हुआ है।

अल्लू अर्जुन के समर्थन में उतरे अन्नामलाई

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलुगु फिल्मों के सुपरस्टार अल्लू अर्जुन को लेकर अब राजनीति गरमाने लगी है। थिएटर में भगदड़ और

एक महिला की मौत की घटना को लेकर अल्लू अर्जुन और तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी आमने-सामने हैं। इस मामले में पुलिस ने मंगलवार को अल्लू अर्जुन से तीन घंटे तक पूछताछ की है। बता दें कि इससे पहले अल्लू अर्जुन के आवास पर हमला पर भी किया गया है। वहीं, अब तमिलनाडु बीजेपी के अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने पूरे मामले में अभिनेता अल्लू अर्जुन का समर्थन किया है और तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी पर जमकर निशाना साधा है। भाजपा नेता के अन्नामलाई ने मंगलवार को सीएम रेवंत रेड्डी पर निशाना साधते हुए कहा- ÷मुझे लगता है कि रेवंत रेड्डी इस बात को लेकर कंपीटीशन करने की कोशिश कर रहे हैं कि तेलंगाना में सुपरस्टार कौन है। वह यह दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि वह अल्लू अर्जुन से ज्यादा बड़े सुपरस्टार हैं। अभी भी वह कांग्रेस में अभिनय कर रहे हैं, वह तेलंगाना में मुख्य अभिनेता हैं। अन्नामलाई ने कहा- ÷ जो लोग आए और हंगामा किया, पथराव किया (अल्लू अर्जुन के आवास पर), उनमें से 2-3 लोग उनके (रेवंत रेड्डी) निर्वाचन क्षेत्र से आए थे... यह राजनीति से प्रेरित है ...किसी को पीड़ित करना और धमकाना है गलत...क्या अल्लू अर्जुन का इरादा या मकसद था कि कोई मर जाएगा...ऐसा नहीं होना चाहिए था लेकिन पीड़ित करना और धमकाना सही नहीं है...÷

50,000 वोटर्स को जोड़ने का था दावा

महाराष्ट्र में मतदाता सूची में गड़बड़ी के आरोप पर चुनाव आयोग का जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में मतदाताओं के नाम जोड़ने या हटाने को लेकर कांग्रेस की ओर से उठाए गए सवालों का चुनाव आयोग ने मंगलवार को जवाब दिया। चुनाव आयोग ने कहा कि मतदाता सूची में मतदाताओं के नाम न तो मनमाने ढंग से जोड़े गए हैं और न ही हटाए गए हैं। आयोग ने कांग्रेस के इन आरोपों को निराधार बताया और कहा कि इस विषय में पूरी प्रक्रिया पारदर्शी और नियमों के अनुसार की गई है।

कांग्रेस को दिए अपने जवाब में आयोग ने यह भी कहा कि हाल में संपन्न विधानसभा चुनाव में शाम 5ः00 बजे के मतदान के आंकड़ों की तुलना अंतिम मतदान आंकड़ों के साथ करना सही नहीं होगा। कांग्रेस ने नवंबर में हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से संबंधित विभिन्न चिंताओं को लेकर चुनाव आयोग का रुख किया था। एक विस्तृत नोट जारी करते हुए आयोग ने कांग्रेस को बताया कि शाम 5ः00 बजे से रात 11ः45 बजे तक मतदान प्रतिशत में बढ़ोतरी सामान्य थी, जो मतदान के मतों को जोड़ने की प्रक्रिया का हिस्सा था और मतों एवं गिने गए मतों में वास्तविक, लेकिन असंगत अंतर हो सकता है।

आयोग ने इस बात पर जोर दिया कि वास्तविक मतदान प्रतिशत को बदलना असंभव है, क्योंकि मतदाता मतदान का विवरण देने वाला वैधानिक फॉर्म 17सी मतदान केंद्र पर मतदान बंद होने के समय उम्मीदवारों के अधिकृत एजेंट के पास उपलब्ध होता है। इसमें कहा गया है कि महाराष्ट्र में मतदाता सूची तैयार करने में पारदर्शिता के साथ नियम-आधारित प्रक्रिया का पालन किया गया और राज्य में मतदाता के नाम हटाए जाने में कोई अनियमित चलन नहीं था। इसने कांग्रेस को बताया कि मतदाता सूची तैयार करने में कांग्रेस प्रतिनिधियों की भागीदारी सहित उचित प्रक्रिया का पालन किया गया था।

आयोग ने मुख्य विपक्षी दल से कहा कि जुलाई और नवंबर के बीच 50 विधानसभा सीट पर औसतन 50,000 मतदाताओं के जुड़ने का उसका दावा तथ्यात्मक रूप से गलत और भ्रामक है। कांग्रेस का दावा था कि इन 50 सीट में से 47 पर 'महायुति' ने जीत हासिल की है। आयोग के अनुसार, तथ्य यह है कि इस अवधि के दौरान केवल 6 विधानसभा क्षेत्रों में कुल मिलाकर 50,000 से अधिक मतदाता जुड़े थे, इसलिए इस आधार पर 47 सीट पर जीत का सवाल ही नहीं उठता।

आयोग ने पूरी चुनावी प्रक्रिया के दौरान राजनीतिक दलों या उम्मीदवारों की सक्रिय भागीदारी के लगभग 60 उदाहरणों को भी सूचीबद्ध किया। आयोग ने इस बात को दोहराया कि राजनीतिक दल, प्रमुख हितधारक होने के नाते, चुनाव प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में %रोल टू पोल% (मतदाता सूची तैयार करने से लेकर मतदान प्रक्रिया पूरी होने तक) में शामिल होते हैं।

परीक्षा में मोबाइल के साथ पकड़ा गया 10वीं का छात्र, लगाई फांसी

धार (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के धार जिले से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक छात्र को स्कूल में परीक्षा के वक्त मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते पकड़ा गया था। स्कूल प्रबंधन की ओर से छात्र के खिलाफ कार्रवाई की गई। इस घटना के बाद छात्र ने कथित तौर पर आत्महत्या कर ली है। पुलिस ने कहा है कि प्राथमिक रूप से पता लगा है कि छात्र मौत फांसी लगाने से हुई है। परिवार के लोग छात्र को रात में अस्पताल ले गए थे। हालांकि, यहां डॉक्टरों ने छात्र को मृत घोषित कर दिया। धार जिले की पुलिस ने मंगलवार को इस घटना के बारे में पूरी जानकारीसाझा की है। आत्महत्या की ये घटना जिला मुख्यालय से करीब 10 किलोमीटर दूर उटावड़ गांव में हुई है। पुलिस के मुताबिक, परिवार के सदस्यों ने पूछताछ में बताया है कि एक प्राइवेट स्कूल में सोमवार को छात्र परीक्षा के दौरान मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते हुए पकड़ा गया था। फोन मिलने के बाद स्कूल मैनेजमेंट ने छात्र के खिलाफ कार्रवाई की, जिसके कारण उसने यह कदम उठाया। पुलिस के मुताबिक, प्रथम दृष्ट्या ऐसा पता लगा है कि छात्र की मौत फांसी लगाने से हुई है। इस घटना को लेकर मामला भी दर्ज किया गया है। वहीं, स्कूल के प्रिंसिपल ने इस घटना पर बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि प्री-बोर्ड में मैथ्स के पेपर के दौरान छात्र को मोबाइल का इस्तेमाल करते हुए पकड़ा गया था।

आतिशी के सामने चुनाव लड़ सकती हैं फरहाद!

दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस ने अपने 27 उम्मीदवारों की लिस्ट तैयार कर ली

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस ने अपने 27 उम्मीदवारों की लिस्ट तैयार कर ली है। सूत्रों के अनुसार, इस लिस्ट में कांग्रेस अलका लांबा को कालकाजी सीट से उतार सकती है। यहां से अभी आम आदमी पार्टी ने सीएम आतिशी को उतारा है।

सूत्रों के अनुसार, कांग्रेस की संभावित लिस्ट में फरहाद सूरी का नाम है, जो जंगपुरा से मनीष सिसोदिया के खिलाफ चुनाव लड़ सकते हैं। सीमापुरी से राजेश लिलोठिया और मटिया महल से आसिम अहमद का नाम शामिल है। माना जा रहा है कि आज कांग्रेस अपनी ये लिस्ट जारी कर सकती है।

आज कांग्रेस की बैठक में कुल 35 सीट पर चर्चा हुई है। इसमें 27 नाम तय कर दिए गए हैं, बाकी 8 नाम पेंडिंग रखे गए हैं। इन पर अगले एक-दो दिनों में फैसला ले लिए जाएगा।

कांग्रेस पहले ही 21 नाम जारी कर चुकी है। 27 नाम आज की बैठक में तय किए गए हैं।

बता दें कि कांग्रेस ने 12 दिसंबर को दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए अपने 21 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी की थी।

कांग्रेस ने दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के बेटे संदीप दीक्षित को अरविंद केजरीवाल के खिलाफ नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र से उतारा है। कांग्रेस की लिस्ट में नरेला से अरुणा कुमारी, बुराड़ी से मंगेश त्यागी, आदर्श नगर से शिवांक सिंघल को उतारा है।

सुल्तानपुर माजरा (एससी) से जय किशन को पार्टी ने टिकट दिया है। सुल्तानपुर माजरा (एससी) से जय किशन को पार्टी ने टिकट दिया है। कांग्रेस पार्टी ने जय प्रकाश को अंबेडकर नगर (एससी) से टिकट दिया है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता हारून यूसुफ को बल्लीमारान से चुनावी मैदान में उतारा गया है।

दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस अभी से तैयारियों में जुट गई है। पार्टी ने अपने पुराने नेताओं को भी इस चुनाव में टिकट देने वाली है। आम आदमी पार्टी से आए नेताओं को भी कांग्रेस टिकट दे सकती है।

बॉस के साथ शारीरिक संबंध बनाने से मना करने पर दिया तीन तलाक

कल्याण (एजेंसी)। महाराष्ट्र के कल्याण में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। यहां एक 45 वर्षीय व्यक्ति ने अपनी 28 वर्षीय पत्नी को अपने बॉस के साथ एक पार्टी में शारीरिक सबंध बनाने के लिए कहा लेकिन पत्नी ने मना कर दिया। पत्नी का आरोप है कि उसके पति ने पहले मायके से 15 लाख रुपये लाने के लिए कहा, बाद में एक पार्टी के दौरान अपने बॉस के साथ शारीरिक संबंध बनाने का दबाव डाला। लेकिन जब उसने मना किया तो पति ने उसकी पिटाई की और तीन तलाक देकर घर से बाहर निकाल दिया। इस घटना से लोगों में रोष व्याप्त है। आरोपी पति पर कठोर कारवाई की मांग की जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार, छत्रपति संभाजी नगर में रहने वाली पीड़िता की शादी जनवरी 2024 में कल्याण में रहने वाले सॉफ्टवेयर इंजीनियर से हुई थी। शुरुआती कुछ महीने उसका रिश्ता ठीक-ठाक चलने के बाद उसके पति ने उसे मायके से पैसे लाने के लिए परेशान करना शुरू कर दिया। आरोपी ने अपनी उससे कहा कि मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूं, इसके लिए पहली पत्नी को तलाक देना है और उसके लिए 15 लाख रुपये लगेंगे। तुम मायके जाकर 15 लाख रुपये लेकर आओ, लेकिन पत्नी ने पैसे नहीं लाए। इतना ही नहीं, पति ने अपनी पत्नी को ऑफिस की एक पार्टी में अपने बॉस के साथ शारिरिक सबंध बनाने के लिए भी कहा। लेकिन जब दूसरी पत्नी ने इससे साफ मना कर दिया तो गुस्से में आकर पति ने उसकी पिटाई कर दी। इसके बाद तीन बार तलाक कहकर घर से निकाल दिया।

ओवैसी को 'जय फिलिस्तीन' बोलना पड़ा महंगा

बरेली की कोर्ट ने नोटिस जारी कर किया तलब

बरेली (एजेंसी)। संसद में %जय फिलिस्तीन% बोलना ओवैसी को भारी पड़ गया है। इसे लेकर देशभर में विवाद हुआ था, जिसके बाद अब बरेली जिला अदालत के न्यायाधीश ने ओवैसी को नोटिस जारी किया है। बरेली की कोर्ट ने संसद में 'जय फिलिस्तीन' बोलने के मामले में ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के राष्ट्रीय अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी को नोटिस जारी कर तलब किया है। एक अधिवक्ता ने मंगलवार को इस बात की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अदालत ने मामले में सात जनवरी को सुनवाई तय की है।

दरअसल, संसद में 'जय फिलिस्तीन' बोलने के मामले में ओवैसी के खिलाफ अधिवक्ता वीरेंद्र गुप्ता ने वाद दायर किया है, जिसमें उन पर संवैधानिक एवं कानूनी मान्यताओं का उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया है। अधिवक्ता वीरेंद्र गुप्ता ने बताया कि उन्होंने एमपी-एमएलए कोर्ट में असदुद्दीन ओवैसी के खिलाफ याचिका दायर की थी, जिसे खारिज कर दिया गया था। इसके बाद उन्होंने पुनरीक्षण याचिका जिला न्यायाधीश की कोर्ट में दायर की थी। उन्होंने बताया कि जिला न्यायाधीश की अदालत ने याचिका को स्वीकार करते हुए सांसद असदुद्दीन ओवैसी को सात जनवरी को हाजिर होने के लिए नोटिस जारी किया है।

वाद दायर करने वाले अधिवक्ता वीरेंद्र गुप्ता ने बताया कि वह ओवैसी के 'जय फिलिस्तीन' का नारा लगाने से आहत हैं। ओवैसी का बयान भारत के संविधान के विपरीत और अपमान करने जैसा है। इसे लेकर ही उन्होंने बरेली एमपी-एमएलए कोर्ट में याचिका दायर की थी, जिसे अदालत ने 12 जुलाई 2024 को खारिज कर दिया था। इसके बाद उन्होंने मामले में जिला न्यायाधीश की अदालत में अपील की।

संभागीय अधिकारियों ने जनकल्याण शिविरों में की शिरकत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के सभी जिलों में प्रशासन गांव की ओर अभियान तथा मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जनकल्याण शिविर लगाकर आमजनता के आवेदनों का निराकरण करने के साथ-साथ शासन की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। कमिश्नर बीएस जामोद द्वारा जनकल्याण शिविरों में समन्वय तथा ग्राम स्तरीय एवं खण्ड स्तरीय कार्यालयों के निरीक्षण के लिए संभागीय अधिकारियों के पाँच दल तैनात किए गए हैं। इनमें शामिल संभागीय अधिकारी लगातार क्षेत्र का भ्रमण करके जनकल्याण शिविरों में शिरकत कर रहे हैं। अधिकारियों द्वारा छात्रावास, स्कूल, धान खरीदी केन्द्र, आंगनवाड़ी केन्द्र तथा अस्पतालों का निरीक्षण भी किया जा रहा है। कमिश्नर जामोद के निर्देशों के अनुसार सीधी जिले के चुरहट में आयोजित जनकल्याण शिविर में संयुक्त संचालक कृषि, संयुक्त संचालक पशुपालन तथा दल के अन्य सदस्य शामिल हुए। शिविर में 70 वर्ष से अधिक आयु के 62 व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनाए गए। शिविर में पशुपालक किसानों के केसीसी बनाने के लिए 91 आवेदन पत्र दर्ज किए गए। मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना के 15 आवेदन पत्र दर्ज किए गए। नगरीय क्षेत्र चुरहट में हैण्डपंपों के सुधार के 25 आवेदन प्राप्त हुए। अधिकारियों के दल ने अनुसूचित जाति बालक छात्रावास चुरहट का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय उपस्थित छात्रों से छात्रावास की भोजन, आवास तथा साफ-सफाई व्यवस्था की जानकारी ली गई।

जनकल्याण शिविर में शामिल हुआ संभागीय दल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत सीधी जिले के गोपालपुर में जनकल्याण शिविर आयोजित किया गया। कमिश्नर बीएस जामोद के निर्देशों के अनुसार इसमें संभागीय अधिकारियों के दल ने शिरकत की। दल में शामिल संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास ऊषा सिंह सोलंकी तथा संयुक्त संचालक शिक्षा एसके त्रिपाठी एवं दल के अन्य सदस्यों ने शिविर में विभागीय योजनाओं की जानकारी दी। शिविर में आयुष्मान योजना, स्वनिधि योजना तथा अन्य योजनाओं के पात्र हितग्राहियों के आवेदन पत्र भरवाए गए। शिविर के बाद दल के सदस्यों ने गोपालपुर आंगनवाड़ी केन्द्र और प्राथमिक शाला का निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय मध्यान्ह भोजन के वितरण, आंगनवाड़ी केन्द्र में बच्चों की उपस्थिति तथा टेकहोम राशन के वितरण की जानकारी ली गई। इसके बाद संभागीय दल ने ग्राम पनवार बघेलान में आयोजित शिविर में भाग लिया। शिविर में आमजनता से 42 आवेदन पत्र प्राप्त हुए। इनमें से 27 पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, 13 राजस्व विभाग तथा 2 विद्युत विभाग से संबंधित थे।

इसी तरह संभागीय दल ने रीवा जिले के जोगिनहाई में आयोजित शिविर में शिरकत की। शिविर में उप संचालक मछलीपालन, सहायक संचालक उद्यानिकी तथा अन्य अधिकारी शामिल रहे। अधिकारियों ने आमजनता को विभागीय योजनाओं की जानकारी दी। शिविर में किसानों से केसीसी के लिए आवेदन पत्र दर्ज कराए गए। दल के सदस्यों ने आंगनवाड़ी केन्द्र जोगिनाई का भी निरीक्षण किया।

कार्य में शिथिलता पर पटवारी को निलंबित करने के दिये निर्देश

राजस्व शिविरों में राजस्व अधिकारी अवश्य उपस्थित रहें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री जनकल्याण पर्व एवं अभियान के साथ ही प्रशासन गांव की ओर कार्यक्रम के तहत जिले में राजस्व शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने राजस्व महाअभियान 3.0 की समीक्षा करते हुए निर्देश दिये कि सभी शिविरों में राजस्व अधिकारी अनिवार्यतः उपस्थित रहे तथा राजस्व प्रकरणों का निराकरण करायें। कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार से कलेक्टर ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से अनुभागवार राजस्व महाअभियान की समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिये कि आरसीएमएस में दर्ज शेष नामांतरण, सीमांकन, वटवारा के प्रकरण तत्काल निराकृत करायें। उन्होंने नवीन प्रकरणों की सुनवाई करने तथा प्रत्येक कैंप का नियमित भ्रमण करने के निर्देश दिये तथा कहा कि कोई भी पटवारी हल्का बिना भ्रमण के न रहे। समीक्षा के दौरान कार्य में शिथिलता पाये जाने पर सिरमौर अनुभाग अन्तर्गत उमरी पटवारी को तत्काल निलंबित करने के निर्देश दिये। उन्होंने जवा अनुभाग में महाअभियान के प्रकरणों के निराकरण की इंट्री न होने पर नाराजगी व्यक्त की। कलेक्टर ने बैठक में कहा कि राजस्व महाअभियान में लंबित आधार सीडिंग, फार्मर रजिस्ट्री, नक्शा तरमीम व प्रधानमंत्री किसान योजना के प्रकरणों को प्राथमिकता से निराकृत किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने सुशासन सप्ताह में व्यवस्थित ढंग से कैंप आयोजन करने तथा प्राथमिकता से राजस्व प्रकरणों के निराकरण के निर्देश अनुविभागीय अधिकारियों को दिये। बैठक में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी, डिप्टी कलेक्टर श्रेयस गोखले, एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, एसएलआर ललन सिंह उपस्थित रहे। अनुभाग के एसडीएम वीडियो कांफ्रेसिंग से जुड़े।

उपार्जित धान के परिवहन को गति दें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने उपार्जन की समीक्षा के दौरान निर्देश दिये कि उपार्जन केन्द्रों में उपार्जित धान के परिवहन को गति दें तथा परिवहनकर्ता को अधिक ट्रक लगाकर परिवहन कार्य में तेजी लाने के लिये निर्देशित करें। बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने कहा कि खरीदी केन्द्रों में धान अधिक मात्रा में रखी है। परिवहनकर्ताओं द्वारा जो ट्रक लगाये गये हैं उनकी संख्या दुगनी कर परिवहन कार्य में तेजी लायें ताकि समय पर परिवहन हो सके। उन्होंने परिवहनकर्ताओं के लंबित राशि के भुगतान के भी निर्देश दिये। कलेक्टर ने समितियों को राशि के भुगतान कराने के लिये निर्देशित किया। समितियों के भुगतान लंबित रहने पर नागरिक आपूर्ति निगम के एकाउंटेंट को नोटिस जारी करने के निर्देश बैठक में कलेक्टर द्वारा दिये गये। उन्होंने वारदानों की उपलब्धता की जानकारी प्राप्त की तथा एक हजार गठानें शासन स्तर से मंगवाये जाने की बात कही। बैठक में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी, संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय सहित उपार्जन कार्य से संबंधित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

वाहन मालिक तत्काल बैंक खाते की जानकारी दें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विधानसभा निर्वाचन 2023 में मतदान दलों को गंतव्य तक पहुंचाने तथा निर्वाचन सामग्री के परिवहन के लिए बड़ी संख्या में वाहनों का अधिग्रहण किया गया था। इन वाहनों की लंबित राशि का भुगतान किया जा रहा है। उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रेयस गोखले ने अधिग्रहीत वाहनों के मालिकों से किराये की राशि प्राप्त करने के लिए जिला निर्वाचन कार्यालय को तत्काल बैंक खाते की जानकारी उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है। बैंक खाते की जानकारी प्राप्त होते ही स्वीकृत भुगतान जारी कर दिया जाएगा। सभी वाहन मालिक तत्काल बैंक खाते का विवरण प्रस्तुत कर दें। समय पर बैंक खाता न मिलने पर आवंटित राशि समर्पित कर दी जाएगी।

स्वागत गीत गाकर दिव्यांग बालिकाओं ने किया स्वागत

दिव्यांग कन्या छात्रावास का कलेक्टर ने किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रशासन गांव की ओर अभियान के तहत जिले के अधिकारियों द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के भ्रमण के साथ ही शासकीय संस्थाओं का भी निरीक्षण किया गया जा रहा है। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने रीवा शहर में समग्र शिक्षा अभियान अंतर्गत संचालित दिव्यांग कन्या छात्रावास का निरीक्षण किया। कलेक्टर का छात्रावास पहुंचने पर दिव्यांग बालिकाओं ने स्वागत गीत गाकर अभिनंदन किया। भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने छात्रावासों से पठन-पाठन के साथ ही उनकी खेल में रूचि की भी जानकारी ली। छात्रावास में रहने वाली कटनी जिले व शहडोल जिले की छात्राओं ने कलेक्टर को बताया कि उनका मन अच्छे से लगता है और वह पूरे लगन के साथ पढ़ाई भी कर रही हैं। कलेक्टर ने छात्रावास में कक्षों, किचन तथा बालिकाओं के लिए इंडोर गेम हाल का भ्रमण किया तथा उनको और बेहतर करने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने बालिकाओं से खेलों की रूचि की जानकारी ली जिस पर बालिकाओं ने कहा कि उन्हें बैडमिंटन, वॉलीबाल के लिए सामग्री व स्थल बनवा दें। कलेक्टर ने मौके पर ही उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि छात्रावास के सामने के स्थल को समतल कर बैडमिंटन कोर्ट व वॉलीबाल कोर्ट बनाएं साथ ही पूरे परिसर की साफ-सफाई कराते हुए इसे और भी बेहतर बनाएं। कलेक्टर ने छात्राओं के बीच जमीन में बैठकर फोटो भी खिंचवाई जिस पर सभी छात्राएँ काफी प्रफुल्लित नजर आईं। इससे पूर्व कलेक्टर ने घोघर स्थित दिव्यांग छात्रावास के परिसर का भ्रमण किया। उन्होंने निर्देश दिए कि अपूर्ण छात्रावास भवन को पूरा कराने में आ रही बाधाओं को दूर करें तथा जो भवन निर्मित हो गया है उसमें छात्रावास संचालित कराएं। उन्होंने जीर्ण-शीर्ण भवनों को निष्पादित कराने के भी निर्देश अधिकारियों को दिए। इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी सुदामालाल गुप्ता, पीआईयू के सहायक यंत्री आरएस वर्मा उपस्थित रहे।

जनसुनवाई में 97 आवेदन पत्रों में की गई सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जनसुनवाई में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी तथा संयुक्त कलेक्टर पीके पाण्डेय ने आमजनता के 97 आवेदन पत्रों में सुनवाई की। अपर कलेक्टर ने कहा कि सभी अधिकारी सात दिवस की समय सीमा में जनसुनवाई के आवेदन पत्रों का निराकरण करके आवेदक को इसकी सूचना दें। आवेदनों के निराकरण की ऑनलाइन जानकारी दर्ज कराएं। सभी अधिकारी जनसुनवाई में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहकर आवेदनों का समुचित निराकरण करें।

जनसुनवाई में त्रिवेणी प्रसाद मिश्रा निवासी कलवारी ने सड़क निर्माण में भूअर्जन की राशि के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने भूअर्जन अधिकारी को प्रकरण में कार्यवाही के निर्देश दिए। गयाशरण सिंह निवासी बहुरीबांध ने धान उपार्जन की राशि में ऋण राशि की अधिक कटौती को वापस करने के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने महाप्रबंधक जिला सहकारी बैंक को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। रमाकांत द्विवेदी निवासी हरदुआ ने समग्र आईडी में सुधार के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने सीईओ जनपद सिरमौर को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। विवेक पाण्डेय निवासी गोदकला ने उनके पट्टे की जमीन का विवरण खसरे में दर्ज करने के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने अधीक्षक भू अभिलेख को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए।

जन सुनवाई में सेवानिवृत्त सहायक ग्रेड तीन राजेन्द्र सिंह ने स्वत्वों के भुगतान के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने जिला शिक्षा अधिकारी को लंबित पेंशन प्रकरण का निराकरण कराने के निर्देश दिए। रामनारायण विश्वकर्मा निवासी चोरहटा ने नक्शे में सुधार के लिए आवेदन दिया। अपर कलेक्टर ने तहसीलदार हुजूर को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। राममनोहर द्विवेदी निवासी तिघरा ने जमीन विवाद के कारण उनके घर में नलजल योजना का कनेक्शन न देने की शिकायत की। अपर कलेक्टर ने जिला प्रबंधक जल निगम को आवेदन में कार्यवाही के निर्देश दिए। जनसुनवाई में छात्रवृत्ति भुगतान, बिजली बिल में सुधार, मजदूरी भुगतान, अनुकंपा नियुक्ति, जमीन के सीमांकन सहित विभिन्न विभागों से जुड़े आवेदनों में सुनवाई की गई। जनसुनवाई में सभी संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

जनकल्याण अभियान में 26, 27 और 28 दिसंबर को लगेंगे शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पात्र हितग्राहियों को शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ देने के लिए जिले भर में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जिले के सभी विकासखण्डों में ग्राम पंचायतवार शिविर लगाये जा रहे हैं। इन शिविरों में शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी जा रही है साथ ही पात्र हितग्राहियों से आवेदन भरवाकर उन्हें हितलाभ का वितरण किया जा रहा है। इस संबंध में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने बताया कि जनकल्याण अभियान के तहत 26, 27 और 28 दिसंबर को शिविर लगाये जायेंगे। कलेक्टर ने बताया कि अनुभाग रायपुर कर्चुलियान में 26 दिसंबर को ग्राम पंचायत अमिलिया और खरहरी, 27 दिसंबर को नयागांव, सुरसाकला और उकठा कंचनपुर में शिविर लगाये जायेंगे। इसी तरह 28 दिसंबर को बंजारी और हरदुआ में शिविर लगेंगे। अनुभाग हुजूर में 26 दिसंबर को ग्राम पंचायत मैदान और अटरिया, 27 दिसंबर को दुआरी तथा धौचट तथा 28 दिसंबर को कचूर एवं गढ़वा में शिविर लगेंगे। अनुभाग जवा में 26 दिसंबर को ग्राम पंचायत डगडैया और गाढ़ा 138 में, 27 दिसंबर को ग्राम पंचायत चौखण्डी और शिवपुर तथा 28 दिसंबर को ग्राम पंचायत चौर तथा बसरेही में शिविर लगेंगे। अनुभाग मनगवां में 26 दिसंबर को ग्राम पंचायत रघुनाथगंज और रमपुरवा, 27 दिसंबर को गुढ़वा और देवरा एवं 28 दिसंबर को सूरा, तिवनी और सहेवा में शिविर लगाये जायेंगे। इसी तरह अनुभाग त्योंथर में ग्राम पंचायत 26 दिसंबर को ग्राम पंचायत गंगतीरा कला और कोटरा खुर्द, 27 दिसंबर को पनासी तथा 28 दिसंबर को झोटिया और चन्द्रपुर में शिविर लगाये जायेंगे। अनुभाग सिरमौर में 26 दिसंबर को ग्राम पंचायत डिहिया और गहनौआ, 27 दिसंबर को बदराव गौतमान और बदराव तिवरियान तथा 28 दिसंबर को मझिगवां (बैकुण्ठपुर), नदना डिहिया तथा माड़ौ में शिविर लगाये जायेंगे। कलेक्टर ने आमजनता से इन शिविरों से लाभ उठाने की अपील की है।

आनंद उत्सव मनाने के लिए जिला स्तरीय समिति गठित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासन के निर्देशों के अनुसार जिले में 14 जनवरी से 28 जनवरी तक आनंद उत्सव मनाया जाएगा। इसके तहत जिला और विकासखण्ड स्तर पर विभिन्न आयोजन होंगे। आनंद उत्सव मनाने के लिए कलेक्टर प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समिति गठित की गई है। समिति में सदस्य के रूप में आयुक्त नगर निगम, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय, अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास तथा उप संचालक खेल एवं युवा कल्याण को शामिल किया गया है। समिति में सभी एसडीएम, उप संचालक जनसम्पर्क, जिला शिक्षा अधिकारी, जिला संयोजक आदिमजाति कल्याण, परियोजना अधिकारी शहरी विकास अभिकरण, जिला युवा अधिकारी नेहरू युवा केन्द्र तथा डॉ मुकेश येंगल प्रतिनिधि राज्य आनंद संस्थान को सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। नोडल अधिकारी आनंद विभाग तथा संभागीय समन्वयक जनअभियान परिषद प्रवीण पाठक को समिति का सदस्य सचिव बनाया गया है।

नगर निगम में लोकनायक स्कूल के पास 26 दिसम्बर को लगेगा शिविर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत रीवा नगर निगम क्षेत्र में जनकल्याण शिविरों का लगातार आयोजन किया जा रहा है। इन शिविरों में आमजनता को विभिन्न योजनाओं की जानकारी देने के साथ पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। इस संबंध में आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े ने बताया कि 26 दिसम्बर को वार्ड क्रमांक 29, 30 और 31 के लिए लोकनायक स्कूल के पास जनकल्याण शिविर लगाया जा रहा है। आमजनता से शिविर से लाभ उठाने की अपील की गई है।

कलेक्टर ने 6 समिति प्रबंधकों को दिया निलंबन का नोटिस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले भर में निर्धारित खरीदी केन्द्रों में समर्थन मूल्य पर धान का उपार्जन किया जा रहा है। उपार्जन समिति के सदस्यों तथा राजस्व अधिकारियों द्वारा खरीदी केन्द्रों का नियमित रूप से निरीक्षण किया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान 6 खरीदी केन्द्रों में उपार्जन संबंधी व्यवस्थाओं में कमियाँ पाई गईं। खरीदी केन्द्र में नमी मापक यंत्री खराब रहने, तौलकर रखी गई धान की बोरियों में स्टेंसिल नहीं लगाने तथा टैग पर किसान कोड अंकित नहीं होने जैसी कमियाँ मिलीं। खरीदी केन्द्रों में धान की बोरियों की तौल कराने पर धान निर्धारित मात्रा से कम और अधिक पाई गई। धान के भण्डारण में भी लापरवाही मिली। इसे गंभीरता से लेते हुए कलेक्टर प्रतिभा पाल ने 6 खरीदी केन्द्रों के समिति प्रबंधकों को निलंबन का नोटिस दिया है। जारी अलग-अलग नोटिस में समिति प्रबंधकों को खरीदी केन्द्र निरस्त करने, उपार्जन से ब्लैकलिस्टेड करने का भी नोटिस दिया गया है। नोटिस का तीन दिवस में संतोषजनक उत्तर प्राप्त न होने पर एक पय कार्यवाही की जाएगी। कलेक्टर ने धान उपार्जन में लापरवाही बरतने पर सेवा सहकारी समिति मझियार क्रमांक एक, हर्दीशंकर क्रमांक दो, बहुरीबांध क्रमांक एक, खैरा क्रमांक एक, बम्हनगवां तथा सहकारी समिति बिहरा के समिति प्रबंधकों को नोटिस दिया है।

सुपर स्पेशलिटी हास्पिटल में ली गई सुशासन की शपथ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सुपर स्पेशलिटी हास्पिटल में 24 दिसम्बर को सुशासन दिवस मनाया गया। अस्पताल के सभाकक्ष में प्रातः 11 बजे अधीक्षक डॉ अक्षय वास्तव ने डॉक्टरों तथा चिकित्सा कर्मियों को सुशासन की शपथ दिलाई। डॉ. वास्तव ने कहा कि सभी डॉ तथा चिकित्साकर्मी रोगियों के प्रति अच्छा व्यवहार रखें तथा बेहतर उपचार सुविधाएं उपलब्ध कराएं। सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में अनुशासन तथा सुशासन के उच्चतम मापदण्डों का पालन करें। इस अवसर पर डॉ रेणु पटेल, डॉ प्रीतम सिंह, आरती शुक्ला, नर्सिंग आफीसर एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वामित्व योजना के जिला स्तरीय कार्यक्रम के लिए अधिकारी तैनात

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। स्वामित्व योजना का जिला स्तरीय कार्यक्रम 27 दिसम्बर को दोपहर 12.30 बजे से कृष्णा राज कपूर ऑडिटोरियम में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी वर्चुअल माध्यम से शामिल होकर योजना के पात्र हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण करेंगे तथा हितग्राहियों से संवाद करेंगे। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने सम्पूर्ण कार्यक्रम के लिए अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी को नोडल अधिकारी तथा डिप्टी कलेक्टर श्रेयस गोखले को सहायक नोडल अधिकारी बनाया गया है। अतिथियों के आमंत्रण एवं मंचीय व्यवस्था की जिम्मेदारी एसडीएम हुजूर वैशाली जैन को सौंपी गई है। कार्यक्रम स्थल की सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए प्रभारी तहसीलदार यतीश शुक्ला को तैनात किया गया है। पात्र हितग्राहियों को कार्यक्रम स्थल पर लेकर आने और पट्टा वितरण की व्यवस्था के लिए नायब तहसीलदार विन्ध्या मिश्रा और नायब तहसीलदार वेदवती सिंह को तैनात किया गया है। कार्यक्रम की अन्य व्यवस्थाओं के लिए जिला सूचना विज्ञान अधिकारी मनीष पटेल, जिला प्रबंधक ई गवर्नेंस आशीष दुबे और अग्रणी बैंक प्रबंधक जगमोहन को तैनात किया गया है। कलेक्टर ने नगरीय निकायों और नगर पंचायतों में कार्यक्रम के आयोजन के लिए भी नोडल अधिकारी तैनात किए हैं। नगर परिषद गुढ़ में आयोजित कार्यक्रम के लिए एसडीएम गुढ़ डॉ अनुराग तिवारी तथा जनपद पंचायत कार्यालय गंगेव एवं नगर परिषद मनगवां में आयोजित कार्यक्रम के लिए एसडीएम मनगवां पीएस त्रिपाठी को नोडल अधिकारी बनाया गया है।

अतिक्रमण हटाने गए वन अमले पर हमला

डिप्टी रेंजर की शिकायत पर 3 लोगों के खिलाफ केस दर्ज

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। वन भूमि से अतिक्रमण हटाने गए वन अमले पर ग्रामीणों ने हमला कर दिया। घटना सोमवार को शहडोल जिले के केशवाही रेंज के कोपरी बीट अंतर्गत छिनमार गांव की है। डिप्टी रेंजर की शिकायत पर पुलिस ने मंगलवार को तीन लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। जैतपुर पुलिस के मुताबिक, केशवाही वन परिक्षेत्र में आने वाली बीट कोपरी के छिनमार गांव में सोमवार को वन विभाग की जमीन पर कुछ लोग अवैध कब्जा कर रहे थे। इसकी जानकारी वन विभाग को लगी। जानकारी लगने के बाद डिप्टी रेंजर बृजभान सिंह मौके पर पहुंचे और कब्जा कर रहे लोगों को रोका गया, तभी ग्रामीण नाराज हो गए और डिप्टी रेंजर से गाली गलौज करने लगे।

अतिक्रमण रोकते ही किया हमला: मामला बिगड़ता देख डिप्टी रेंजर ने मामले की जानकारी केशवाही रेंजर अंकुर तिवारी को दी। रेंजर अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और लोगों को कब्जा करने से रोका गया, जिसके बाद समय लाल चौधरी, रामहित चौधरी और संजय चौधरी ने वन विभाग की टीम पर हमला बोल दिया।

रेंजर को तत्काल दी सूचना: डिप्टी रेंजर बृजभान ने बताया- जब मुझे जानकारी मिली कि कुछ लोग अवैध कब्जा कर रहे हैं। वह भूमि वन विभाग की आरक्षित है तो मैं मौका देखने अकेले पहुंचा। वहां कुछ लोग वन भूमि में अवैध कब्जा कर रहे थे। मैंने उन्हें रोकने का प्रयास किया। लोग मुझ पर हावी हो गए, जिसके बाद मैंने इसकी जानकारी अपने रेंज अधिकारी को दी।

समझाने के बाद भी नहीं माने आरोपी: रेंजर अंकुर तिवारी अपनी टीम के साथ जब मौके पर पहुंचे तो कब्जा कर रहे लोगों को समझने का प्रयास किया गया, लेकिन तीनों लोगों ने हम पर हमला कर दिया और हाथ में रखे सबल, फावड़ा और गैंती से हमला करते हुए जान से मार देने की धमकी देने लगे। इसके बाद वन विभाग की टीम मौके से वापस आ गई।

आरोपी फरार, पुलिस तलाश में जुटी: जैतपुर थाना प्रभारी रामकुमार गायकवाड़ ने बताया कि इस मामले पर तीन लोगों के विरुद्ध अपराध दर्ज किया गया है। आरोपियों की तलाश की जा रही है अभी आरोपी पुलिस गिरफ्त से फरार हैं। जैतपुर थाना के चौकी दरशिला में डिप्टी रेंजर की शिकायत पर पुलिस ने तीनों आरोपियों के विरुद्ध शासकीय कार्य में बाधा वन विभाग की टीम से गाली गलौज कर जान से मार देने की धमकी व अन्य धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है।

जैन मंदिर के पास लगी भीषण आग

11 दुकानें जलकर राख, करोड़ों का हुआ नुकसान, आग बुझाने में देरी पर व्यापारियों ने किया हंगामा

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। नगर परिषद अमरकंटक में स्थित जैन मंदिर के पास की दुकानों में भीषण आग लग गई। इस आग में 11 दुकानें चपेट में आईं, जिनका लगभग करोड़ों का सामान जलकर खाक हो गया। जानकारी के अनुसार, जैन मंदिर के पास स्थित दुकानों में बीती रात भीषण आग लग गई। आग के कारण 11 दुकानों का सामान पूरी तरह जलकर राख हो गया।

अज्ञात व्यक्ति पर आग लगाने का आरोप, अमरकंटक में व्यापारी चिंतित: व्यापारी चुन्नू जैन और नीलेश जैन ने आरोप लगाया कि आग अज्ञात व्यक्ति ने लगाई थी। इसके अलावा उन्होंने नगर परिषद पर लापरवाही का आरोप भी लगाया, क्योंकि लगभग 100 मीटर की दूरी पर नगर परिषद का नया भवन स्थित था, जहां फायर ब्रिगेड की गाड़ी भी मौजूद थी।

फायर ब्रिगेड की देरी से आग बढ़ी, नगर परिषद के खिलाफ व्यापारी हुए गुस्साए: हालांकि, फायर ब्रिगेड की गाड़ी में पानी नहीं था, जिसके कारण समय पर आग पर काबू नहीं पाया जा सका। इससे गुस्साए लोगों ने नगर परिषद अमरकंटक की गाड़ी में तोड़फोड़ की। इसके बाद नगर पालिका अनूपपुर से फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया।

पशु तस्करी करते एक वाहन जब्त

देवलोंद पुलिस ने घेराबंदी कर 11 मवेशियों को छुड़ाया

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल जिले की देवलोंद थाना पुलिस ने पशु तस्करी करते हुए एक वाहन को जब्त किया हैं। उसमें कुल 11 मवेशी मिले हैं। पुलिस ने आरोपी वाहन चालक से मवेशी परिवहन से संबंधित दस्तावेज मांगे। जिस पर उसके पास कोई भी वैध दस्तावेज नहीं मिले। जिसके बाद पुलिस ने वैधानिक कार्रवाई की है। घटना बीती रात की है।

देवलोंद पुलिस के मुताबिक, बीती रात गश्त के दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि एक पिकअप वाहन में मवेशियों की तस्करी थाना क्षेत्र से होने वाली है। जिसके बाद पुलिस ने सक्रियता दिखाते हुए चंदोला फॉरेस्ट बैरियर के पास पिकअप वाहन क्रमांक यूपी 12 सीटी 8733 को रोका। जिसमें 6 भैंस और 5 भैंसा को निर्दयता से ठूंस-ठूंसकर भरा गया था। जिन्हें पुलिस ने मुक्त कराया गया।

वाहन चालक से पूछताछ करने पर अपना नाम आसीम खान (32) पिता रहमत खान और सहयोगी का नाम गुलाम रजा (26) पिता रज्जाक खान दोनों निवासी ग्राम छवारी थाना मझौली जिला सीधी का होना बताया। पुलिस ने दोनों को हिरासत में लिया गया। मौके से वाहन और मवेशियों समेत कुल 10 लाख रुपए का मशरूका जब्त किया गया। आरोपियों के खिलाफ पशु क्रूरता निवारण अधिनियम और मोटर वाहन अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया।

इस कार्रवाई में थाना प्रभारी देवलोंद, प्रधान आरक्षक सुनीत मिश्रा, आरक्षक विनोद तिवारी, अभिषेक तिवारी, सौरभ मिश्रा और ओमप्रकाश तिवारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

खड़ी मालगाड़ी के डिब्बे से निकला धुंआ

कोरबा से राजस्थान जा रहा था कोयला, यात्रियों की सूचना के बाद बुझाई आग

मीडिया ऑडीटर, शहडोल निप्र। शहडोल रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर दो पर खड़ी मालगाड़ी के एक बैगन में अचानक धुआं निकलने लगा। जिसे देख रेलवे स्टेशन में हड़कंप मच गया। मामले की जानकारी स्टेशन मास्टर के साथ-साथ रेलवे कर्मचारियों को दी गई। जिसके बाद पूरा अमला मौके पर पहुंचा और बैगन में लगी आग पर काबू पा लिया गया है। मालगाड़ी में कोयला लोड था। घटना मंगलवार सुबह 11 बजे की है।

कोरबा से कोयला लोड कर मालगाड़ी राजस्थान की ओर जा रही थी। तभी शहडोल रेलवे स्टेशन में मंगलवार की सुबह प्लेटफार्म नंबर दो पर कोयला लोड मालगाड़ी पहुंची। तभी उसके एक बैगन क्रमांक 221224 के पहिए के पास से अचानक से धुआं निकल रहा था। स्टेशन में खड़े यात्रियों ने धुंआ निकलते देखा और इसकी जानकारी रेलवे प्रबंधन को दी। रेलवे के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे और आग बुझाने का कार्य किया गया।

तुरंत आग को बुझाया: रेलवे के सहायक जनसंपर्क अधिकारी अंबिकेश साहू ने बताया कि मंगलवार की सुबह शहडोल रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर दो पर खड़ी मालगाड़ी के एक बैगन से धुआं निकालने लगा। बैगन में कोयला लोड था, कोयला लोड मालगाड़ी कोरबा से राजस्थान जा रही थी।

घटना की जानकारी प्लेटफार्म नंबर दो पर खड़े यात्रियों ने रेल प्रबंधन को दी थी। आग पर तुरंत काबू पा लिया गया है। इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। इससे कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ है।

मामले में दिए जांच के आदेश: घटना के समय कुछ देर के लिए स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर दो पर अफरा-तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया था। मामले की जांच के निर्देश अधिकारियों ने दिए है कि आग शॉर्ट सर्किट से लगी या अन्य कोई वजह है। इस मामले की जांच होगी। जांच के बाद ही स्पष्ट होगा कि आग लगने का कारण क्या था। अब स्थिति सामान्य है। कोई भी ट्रेन प्रभावित नहीं हुई है।

बेटे ने मां पर धारदार हथियार से किया हमला

नशे में बेटा मांग रहा था जमीन और घर में हिस्सा, जिला अस्पताल में इलाज जारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी में जमीन और घर में हिस्से की मांग करने पर शुरू हुआ विवाद में बेटे ने नशे की हालत में मां के ऊपर धारदार हथियार से हमला कर दिया। जिससे मां के चेहरे पर गंभीर रूप से चोट आई हैं, जिसका इलाज गंभीर अवस्था में जिला अस्पताल सीधी में चल रहा है। घटना मंगलवार सुबह की है।

सीधी जिले के कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम डैनिहा में आरोपी अर्जुन रावत ने अपनी मां रामबाई रावत के ऊपर धारदार हथियार से हमला कर दिया गया। जिसकी वजह से वह गंभीर रूप से घायल हो गई। महिला के चेहरे पर गंभीर चोट लगी है। जिसे वहां पर मौजूद लोगों ने जिला अस्पताल सीधी में भर्ती कराया है। सिविल सर्जन डॉ दीपा रानी इसरानी ने बताया कि महिला की हालत गंभीर है। उसकी चेहरे पर काफी चोटें आई हैं।

मामले में कोतवाली थाना प्रभारी अभिषेक उपाध्याय ने बताया कि मारपीट की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है और जांच की जा रही है।

कुसमी एसडीएम ने किया कोडार नहर का निरीक्षण

अधिकारियों को दिए मरम्मत करने के निर्देश, ग्रामीणों से की चर्चा

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिले का आदिवासी ब्लॉक कुसमी लगातार अव्यवस्थाओं में अव्वल रहा है। क्योंकि यहां व्यवस्थाएं सुधारने का नाम नहीं ले रही हैं। बीते 5 सालों से कोडार बांध की नहर से पानी की सप्लाई नहर टूट जाने से बंद थी। जिसकी शिकायत ग्रामीणों ने कई बार सिंचाई विभाग के अधिकारी एसडीएम और कलेक्टर से की। लेकिन आज तक कोई सुनवाई नहीं हुई थी और ना तो कोई भी अधिकारी इसे देखने तक आया था।

इस बार कुसमी की एसडीएम से ग्रामीणों ने शिकायत की थी और इसे मरम्मत कराने की मांग की थी। जिसके बाद कुसमी एसडीएम प्रिया पाठक ने कोड़ार बांध और नहर का मंगलवार के दिन दोपहर 1 बजे निरीक्षण किया है। साथ ही ग्रामीणों से बातचीत करते हुए सिंचाई विभाग को जल्द से जल्द नहर के मरम्मत को कराने और पानी की सप्लाई देने के निर्देश दिए हैं।

200 किसान होंगे लाभान्वित: ग्रामीण राम प्यारे सिंह ने बताया कि इससे टूटी हुई नहर का अगर मरम्मत कार्य करा दिया जाता है। तो लगभग 200 किसान नहर के माध्यम से अपनी खेतों की सिंचाई कर सकते हैं। इसकी वजह से यहां काफी मात्रा में अनाज का उत्पादन बढ़ जाएगा। हालांकि एसडीएम के आने के बाद लोगों की उम्मीद जगी है। हम इसे मरम्मत कार्य को पूर्ण कराने के लिए एसडीएम से बातें कह रहे हैं।

एसडीएम के निरीक्षण के दौरान मौके पर कोडार सरपंच सीता अखंड सिंह, कोडार,पटवारी सीपी सिंह, कुसमी भाजपा मंडल अध्यक्ष अखंड प्रताप प्रदीप पनिका सहित कई ग्रामीण उपस्थित रहे।

शासकीय महाविद्यालय मझौली में प्राचार्य सहित छात्र-छात्राओं ने किया श्रमदान

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय मझौली में मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशों के अनुपालन में मुख्यमंत्री जनकल्याण पर्व के अंतर्गत वृहद स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य खुले में कूड़े करकट फेंकने से रोकना, सिंगल यूज प्लास्टिक के प्रयोग को कम करना है। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ गीता भारती ने कहा कि युवाओं के श्रमदान से भारत स्वच्छता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। महाविद्यालय हमारा घर है इसे साफ बनाए रखना हम सबका कर्तव्य है। स्वर्णिम भारत के निर्माण में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रोफेसर बी एल सिंह अयाम ने रासेयो के वॉलिंटियर एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को स्वच्छता की जानकारी देते हुए कहा कि यह केवल सरकारों का काम नहीं है बल्कि हम सबका नैतिक कर्तव्य है।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक, अतिथि विद्वान, अशैक्षणिक स्टाफ एवं अत्यधिक संख्या में छात्र-छात्राओं ने अपनी सहभागिता कर स्वच्छता अभियान को सफल बनाया।

धरने पर बैठे सरपंचों से मिले प्रभारी मंत्री

बोले- जिसकी कार्य शैली ठीक नहीं, वह इस सरकार में नहीं चलेगा

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। सोमवार देर रात छतरपुर जिले के प्रभारी मंत्री ऐदल सिंह कंषाना बड़ामलहरा पहुंचे। वहां क्षेत्रीय नेताओं ने उनका स्वागत किया। उन्होंने जनपद सीईओ की तानाशाही से तंग आकर धरने पर बैठे सरपंचों से मुलाकात की।

जानकारी के अनुसार, मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी परियोजना केन बेतवा लिंक परियोजना का 25 दिसम्बर को देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी खजुराहो में शिलान्यास करने आ रहे हैं। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए छतरपुर जिले के प्रभारी मंत्री ऐदल सिंह कंषाना का बड़ामलहरा में पूर्व विधायक प्रदुम सिंह लोधी के निवास पर पहुंचे भाजपाइयों ने शाल श्रीफल भेंट कर स्वागत किया।

वहीं जनपद पंचायत कार्यालय के सामने सरपंच संघ के अध्यक्ष कलन अहिरवार के नेतृत्व में सरपंच टेंट लगाकर धरने पर बैठ गए हैं। धरना स्थल पर प्रभारी मंत्री पहुंचे, जिन्हें सरपंचों ने एक शिकायती आवेदन दिया।

सेंधवा गांव के सरपंच कलन अहिरवार ने बताया कि सरकार ने मनरेगा योजना के अंतर्गत एक आदेश जारी किया था। उस आदेश को बड़ामलहरा जनपद सीईओ सुरेश मिश्रा नहीं मानते हैं। उनका कहना है कि यह आदेश फर्जी है, इस तरह के रवैये के कारण पंचायतों में विकास कार्य नहीं हो पा रहे हैं।

सुशासन सप्ताह और मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान

जिले में 200 स्व-सहायता समूहों को 03 करोड़ 50 लाख रुपये राशि का वितरण किया गया

मध्यांचल ग्रामीण बैंक के सहयोग से स्व-सहायता समूहों का कराया गया बैंक लिंकेज

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। केंद्र एवं राज्य की जनकल्याणकारी योजनाओं से शत-प्रतिशत हितग्राहियों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से जिले में सुशासन सप्ताह तथा मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का क्रियान्वयन किया जा रहा है। महिला सशक्तिकरण उक्त अभियान का महत्वपूर्ण केंद्र है। इसी क्रम में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी अंशुमन राज के सफल मार्गदर्शन एवं जिला परियोजना प्रबंधक पुष्पेंद्र कुमार सिंह के निर्देशन तथा मध्यांचल ग्रामीण बैंक के सहयोग से पूरे जिले में शाखावार स्व -सहायता समूह ऋण वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतीक स्वरुप विकासखंड मझौली में विकासखंड स्तरीय स्व - सहायता समूहों के सीसीएल कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप के दौरान जिले में कुल 200 स्व-सहायता समूहों को 03 करोड़ 50 लाख रुपये राशि का वितरण किया गया। सीसीएल कैंप कार्यक्रम के दौरान उपस्थित आरएम मध्यांचल ग्रामीण बैंक पवन तंडावी द्वारा स्व-सहायता समूहों से चर्चा कर उन्हें बैंक लिंकेज के बारे में समझाया गया।

म.प्र.डे - राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के जिला परियोजना प्रबंधक पुष्पेंद्र कुमार सिंह द्वारा बताया गया कि स्व - सहायता समूह सदस्यों द्वारा बैंक लिंकेज के माध्यम से प्राप्त ऋण से समूह सदस्यों द्वारा आजीविका गतिविधियाँ की जा रही है, जिससे समूह सदस्यों का आर्थिक रूप से सशक्तिकरण हो रहा है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित समूह सदस्यों द्वारा बैंक लिंकेज से प्राप्त ऋण से क्या गतिविधियाँ की जा रही है एवं उन्हें क्या लाभ प्राप्त हुये, के सम्बन्ध में सदस्यों द्वारा अपने अनुभवों को साझा किया गया।

उक्त कार्यक्रम में आशीष मिश्रा तहसीलदार मझौली, अजय सावनेर अग्रिम मैनेजर मध्यांचल ग्रामीण बैंक, जिला मिशन स्टाफअजय सिंह जिला प्रबंधक सूक्ष्म वित्त, प्रशांत कुमार मिश्रा सहायक जिला प्रबंधक सामुदायिक प्रशिक्षण तथा विकासखंड स्तर से चंद्रकांत सिंह विकासखंड प्रबंधक मझौली, संजीव सिंह सहायक विकासखंड प्रबंधक मझौली, स्वदीप सिंह कंप्यूटर ऑपरेटर मझौली उपस्थित रहे।

सीईओ जिला पंचायत ने जिले की गौशालाओं के निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण के लिए समिति का गठन किया

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज द्वारा आदेश जारी कर जिले की गौशालाओं के निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण के लिए समिति का गठन किया गया है। सीधी जिला अंतर्गत ग्राम पंचायतों में वित्तीय वर्ष 2019-20 एवं 2020-21 में कुल 60 गौशालाएं स्वीकृति की गयी है इसके उपरांत भी किसानों की खेती को नुकसान पहुँचाए जाने, सार्वजनिक रास्ते में आवास पशुओं के ठहरने एवं आवारा पशुओं के कारण दुर्घटना होने की शिकायत निरंतर प्राप्त हो रही है। साथ ही गौशालाओं में पशुओं के मृतक होने की भी सूचना मिलती रहती है।

जारी आदेशानुसार संबंधित क्षेत्र के तहसीलदार, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत एवं खण्ड पशु चिकित्सा अधिकारी समिति के सदस्य होंगे। उन्होंने निर्देशित किया है कि गौशालाओं की सूची अनुसार निरीक्षण कर आपके क्षेत्रांतर्गत समस्त गौशालाओं को पूर्ण रूपेण संचालित किया जाकर प्रतिवेदन 30 दिसम्बर तक उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। संबंधित क्षेत्रांतर्गत यदि गौवंश/गौशाला से संबंधित किसी भी प्रकार की शिकायत प्राप्त होती है तो संबंधित जिम्मेदार अधिकारी/कर्मचारियों के विरूद्ध कार्यवाही करते हुए अथवा झूठी शिकायत होनी की स्थिति में शिकायत का खण्डन किया जाकर अविलंब प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाना सुनिश्चित करेंगे।

विचार

थाली में खाना न छोड़ें

इन दिनों शादियों का मौसम है। देखने में आता है कि जितना दिखावा उत्तर भारत और खास तौर से ड्क्षहद्दू समाज की शादियों में होता है, वह शायद और कहीं नहीं। ईसाइयों, मुसलमानों और सिखों में शादियां बहुत सादगी से होती हैं। यह बात काबिले तारीफ है। एक तरफ दहेजमुक्त भारत के सपने देखे जाते हैं और दूसरी ओर शादियों में इतना दिखावा बढ़ गया है कि युवा नौकरी की शुरुआत में ही इतना बड़ा कर्ज उठा लेते हैं कि दशकों तक उसे चुकाते हैं। शादियों के बारे में जब से कार्पोरेट द्वारा अपने उत्पादों को लोकप्रिय करने की अवधारणा फैलाई गई है तब से माना जाने लगा है कि अगर दूल्हा-दुल्हन के पास अमुक ब्रांड के कपड़े नहीं, गहने नहीं, डेस्टीनेशन वैडिंग नहीं, प्री-वैडिंग शूट, पांच सितारा होटल या फार्म हाऊस नहीं तब तक शादियां जैसे हो ही नहीं सकतीं। यही सब करके सोचा जाता है कि शादी को लोग हमेशा याद रखेंगे। मगर सच्चाई यह है कि शादी के प्रांगण से बाहर निकलते ही सब भुला दिया जाता है, हमेशा याद रखने की बात तो दूर है। यूं भी जिन दिनों शादियां बड़े पैमाने पर टूट रही हों, उन दिनों एक दावत को कौन याद रखता है। यही हाल खाने का है। आजकल शादियों में इतनी प्रकार के व्यंजन परोसे जाते हैं कि कायदे से आप सभी का एक-एक चम्मच भी नहीं खा सकते। ऐसा भी होता है कि लोग प्लेटों में खूब खाना परोसते हैं और आधा खाया, आधा छोड़ देते हैं। इस तरह भारी मात्रा में खाना बर्बाद होता है जबकि अपने ही देश में न जाने ऐसे कितने लोग हैं जिन्हें एक वक्त का खाना भी नसीब नहीं। कहा जाता है कि एक बार संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में बताया गया था कि भारत में प्रतिवर्ष 40 प्रतिशत खाना बर्बाद हो जाता है। अगर इसके पैसे का हिसाब लगाया जाए तो यह लगभग 88000 करोड़ रुपए बैठता है। यदि यह पैसा बचे तो और कितने काम आ सकता है। अच्छी बात यह है कि राजस्थान के शहर जोधपुर में 5 साल पहले एक मुहिम शुरू की गई कि थाली में खाना न छोड़ें। इसकी शुरुआत समदड़ी के कुंजुनाथ जैन मंदिर से हुई थी। वहां जयंती लाल पारेख ने इसकी शुरुआत की। बताते हैं कि इसकी प्रेरणा उन्हें महाराष्ट्र से मिली। पारेख ने ऐसी 1000 थालियां बनवाईं जिनमें मोटे अक्षरों में लिखा था कि थाली में जूठन न छोड़ें। पारेख का मानना था कि थालियों पर ऐसा लिखवाने से लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ता है और वे सोच-समझकर खाना लेते हैं। जल्दी ही इस मुहिम ने जोर पकड़ लिया और इसकी शुरुआत जोधपुर जैसे शहर में हुई। इसकी पहल जैन, महेश्वरी और खांची समाज के लोगों ने की। इसे लोगों और शादियों में काम करने वाले कैटरर्स का भी समर्थन मिला। वहां थालियों में लेजर की मदद से मोटे अक्षरों में लिखवाया गया कि कृपया जूठा न छोड़ें।

प्रदूषित हवा में सांस ले रहा भारत

दिल्ली -एन.सी.आर. फिर सांसों के संकट से रू-ब-रू है। दिसबर में ही दूसरी बार बढ़ते वायु प्रदूषण से निपटने के तात्कालिक उपायों के तौर पर ग्रेडेड रिस्पांस एशन प्लान (ग्रेप)-4 लागू करना पड़ा है, योंकि 301 पार करते ही खतरनाक की श्रेणी में पहुंच जाने वाला वायु गुणवाा सूचकांक (ए.यू.आई.) फिर से 450 के पार चला गया। कमर्शियल वाहन छोड़िए बी.एस.-3 पैट्रोल और बी.एस.-4 डीजल निजी कार तक पर प्रतिबंध है-भले ही आपके पास प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र हो और आपकी कार 'फिटनैस' अवधि में भी हो। टैसी और दोपहिया वाहनों पर ऐसी कोई पाबंदी नहीं है। या यह अतार्किक नहीं है? कक्षाएं ऑनलाइन हैं तो 'वर्क फॉम होम' का फरमान जारी है।

हर काम घर से नहीं हो सकता। जो हो सकते हैं, उनकी भी अनुमति ऑफिस की मर्जी पर निर्भर है। यह समस्या पहली बार भी नहीं। हर साल कम-से-कम 2-3 बार ऐसी नौबत आती है, जब आपातकालीन कदम उठाए जाते हैं। आखिर सरकारें आग भड़कने पर ही कुआं खोदने की मानसिकता से उबर कर आग लगने से रोकने के लिए ही जरूरी एहतियाती कदम क्यों नहीं उठातीं? क्या यह शर्मनाक नहीं कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र और पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था भारत की राजधानी दिल्ली के निवासियों को पिछले साल सिर्फ 2 दिन ही सांस लेने लायक साफ हवा मिली?

दिल्ली और एन.सी.आर. निवासी भी लगभग पूरे साल प्रदूषित हवा में सांस लेने और तमाम तरह की बीमारियों से ग्रस्त होने को सालों से अभिशप्त हैं। क्या यह नीति नियंताओं की प्राथमिकताओं पर ही सवालिया निशान नहीं? दिल्ली-एन.सी.आर. के जानलेवा वायु प्रदूषण की चर्चा तो हर साल सर्दियों में हालात बेकाबू हो जाने पर देश-दुनिया में होती है, पर सच यह है कि भारत 'प्रदूषित राष्ट्र' बन चुका है। रिसर्च में बताया गया है कि भारत की 81.9 प्रतिशत आबादी ऐसे क्षेत्रों में रहती है, जहां वायु गुणवत्ता का स्तर अपने देश के नैशनल एंबियट एयर क्वालिटी स्टैंडर्ड्स (एन.ए.ए.क्यू.एस.) पर भी खरा नहीं उतरता। साल 2009 में लाए गए एन.ए.ए.क्यू.एस. को भी अपडेट करने की जरूरत बताई जाती रही है। एन.ए.ए.क्यू.एस. के मुताबिक भारत में सुरक्षित वायु गुणवत्ता का मानक पी.एम. 2.5, 40 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर है, जबकि डब्ल्यू.एच.ओ. 5 माइक्रोग्राम प्रति क्यूबिक मीटर की सिफारिश करता है।

दिल्ली-एन.सी.आर. में वायु प्रदूषण के संदर्भ में डॉक्टर्स और वैज्ञानिक चेताते हैं कि पी.एम. 2.5 न सिर्फ सांस संबंधी समस्याएं बढ़ाता है, बल्कि ब्लड प्रैशर तथा स्ट्रोक और हार्ट अटैक का खतरा भी बढ़ाता है। एक अध्ययन में यह भी बताया गया कि पी.एम. 2.5 के उच्च स्तर के चलते भारत में हर साल 15 लाख मौतें हो रही हैं, जो देश में होने वाली कुल मौतों का लगभग 25 प्रतिशत है। एक अन्य अध्ययन बताता है कि देश में हर रोज 6500 लोग प्रदूषण के चलते होने वाली बीमारियों से मर रहे हैं। अब स्कॉटलैंड की यूनिवर्सिटी ऑफ एंड्रयूज ने अपने शोध में दावा किया है कि वायु प्रदूषण फेफड़ों और दूसरे अंगों के साथ ही हमारी मानसिक स्थिति पर भी गहरा प्रभाव डाल रहा है। लंबे समय तक प्रदूषित हवा में सांस लेने से मानसिक रोगों का खतरा बढ़ रहा है। दो लाख लोगों पर किए गए शोध में पता चला कि नाइट्रोजन डाइऑक्साइड मानसिक विकारों के लिए जिम्मेदार है।

दिल्ली सरकार द्वारा अप्रैल में एन.जी.टी. को सौंपी गई रिपोर्ट में भी दावा किया गया था कि वायु प्रदूषण से लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ रहा है। छात्रों में पढ़ाई संबंधी परेशानियां और उदासी बढ़ रही है तथा जीवन की चुनौतियों से जूझने की क्षमता कम हो रही है। सुप्रीमकोर्ट ने दिल्ली-एन.सी.आर. में बढ़ते वायु प्रदूषण के मामलों की सुनवाई करते हुए स्वच्छ हवा में सांस लेना मौलिक अधिकार बताया था, पर ये आंकड़े तो बताते हैं कि देश में कहीं भी हवा सांस लेने लायक नहीं है। फिर इन हालात के दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई कौन करेगा और कब? दिल्ली विधानसभा चुनाव की दहलीज पर है। देश और दिल्ली में अलग राजनीतिक दलों की सरकारें हैं, जो हर समस्या के लिए एक-दूसरे पर दोषारोपण करते नहीं थकतीं। फिर भी जानलेवा वायु प्रदूषण चुनावी मुद्दा नहीं बनता, क्योंकि सभी तो शरीक-ए-जुर्म हैं।

पिछले दिनों एक अध्ययन से पता चला कि वायु प्रदूषण से साल में सबसे ज्यादा 12,000 मौतें दिल्ली में होती हैं। स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर, 2024 की रिपोर्ट बताती है कि साल 2021 में तंबाकू सेवन से दुनिया भर में 75-76 लाख मौतें हुईं, जबकि वायु प्रदूषण से 81 लाख। तंबाकू सेवन के खतरों के प्रति आगाह करने के लिए सरकारें तमाम तरह के उपाय करती हैं, पर जहरीली हवा पर मौन रहती हैं। क्या इसलिए कि उसके लिए सबसे ज्यादा वे ही जिम्मेदार हैं?

संसद की गरिमा का भी ध्यान रखें सांसद

मैं अपने घर पर टी.वी. देख रहा था। उसी समय एक परिचित परिवार समेत आए। साथ में छोटा बच्चा था जो दूसरी कक्षा में पढ़ता है। टी.वी. पर संसद की कार्रवाई चल रही थी। हंगामा, तख्तियां लहराना, नारेबाजी और बार-बार खड़े होकर बाधा उत्पन्न करने के दृश्य देखकर बच्चे के मन में एक अजीब-सी जिज्ञासा या कौतूहल जैसा कुछ था। बच्चा कभी टी.वी. देखता तो कभी मुझे। अचानक उससे रहा नहीं गया। पूछ ही लिया अंकल, ये कौन सा स्कूल है? कितना उधम करते हैं! बच्चे की जिज्ञासा और उसके मन में कौंध रहे सवाल मेरे लिए असहज थे। उसका पूछना वाजिब था लेकिन मेरे पास उत्तर नहीं था। सदन की कार्रवाई में माननीयों की रुकावटें आम-सी हो गई हैं। लगता है कि संसद अपनी जिम्मेदारियां निभाने में नाकाम होती जा रही है? क्या इससे देश की जनता में निराशा के भाव नहीं आते होंगे? पहले भी ऐसा होता रहा, आगे कब तक होगा नहीं मालूम! संसद, बहस चर्चा और असहमति का मंच हो सकता है, लेकिन व्यवधान का हरगिज नहीं। 25 नवंबर से शुरू हुए 26 दिनों के शीतकालीन सत्र में 19 बैठकें हुईं। लोकसभा का बीता शीतकालीन सत्र अब तक का सबसे कम उत्पादकता वाला केवल 57 प्रतिशत रहा। जबकि राज्यसभा की उत्पादकता 43 प्रतिशत रही। संविधान पर चर्चा और बाकी समय शोर-शराबा और हंगामे के नाम रहा। संविधान की 75वीं वर्षगांठ मनाने की खातिर संविधान दिवस मनाया गया और चर्चा भी हुई। लेकिन संसदीय गरिमा कितनी तार-तार हुई सबने देखा। काश माननीय भी सोचते? 20 दिसंबर तक चले सत्र के दौरान दोनों सदनों में 20 बैठकें हुईं, जो 62 घंटे चलीं। यही समझ आता है कि हमारे माननीय कितने गंभीर हैं? संसद की बैठकों में लगातार कमी आ रही है। भारतीय संसद का पहला सत्र 13 मई 1952 को बुलाया गया जिसमें लोकसभा की 677 बैठकें हुई थीं यानी साल भर का औसत 135 रहा। वहीं पिछली लोकसभा में साल में केवल 55 बैठकें हुईं। 13 मई 1952 को राज्यसभा का पहला अधिवेशन हुआ। 1952 से लेकर 23 मार्च 2020 तक राज्यसभा में 945 सरकारी विधेयक पुरस्थापित किए गए। जबकि 26 दिनों तक चले सत्र में लोकसभा की 20 और राज्यसभा की 19 बैठकें हुईं। लोकसभा में 5 पेश विधेयकों में 4 और राज्यसभा में 3 विधेयक पारित हुए। लोकसभा चुनाव में सरकार, राजनीतिक दल और प्रत्याशियों का हजारों करोड़ रुपए खर्च होता है। लेकिन जनता के प्रति जवाबदेही और विधायी कामकाजों और नीतियों के संवेदनशील मुद्दों पर बहस कम और हो हल्ला ज्यादा होने लगा।

संसद शारीरिक ताकत दिखाने की जगह नहीं

विराग गुप्ता

संसद में धक्का-मुक्की और हिंसा के बाद विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ दर्ज एफ.आई.आर. की क्राइम ब्रांच जांच करेगी, संसद का काम कानून बनाना है, इसलिए ड्क्षहसा से जुड़े कानूनी पहलुओं पर जानकारी और बहस जरूरी है। सांसदों के साथ धक्का-मुक्की में सबसे बड़ा धक्का नई संसद को लगा है, जिसे लोकतंत्र का मंदिर माना जाता है। इस घटना के बाद स्पीकर ओम बिरला ने संसद के सभी द्वारों पर सांसदों और पाूटयों के विरोध प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया है। स्पीकर के पास संसद परिसर में व्यवस्था, अनुशासन और प्रशासन के सभी अधिकार हैं। इसलिए पुलिस, महिला आयोग और एस.सी.एस.टी. आयोग की सक्रिय भूमिका से संसद का अधिकार क्षेत्र सीमित हो सकता है। नए बी.एन.एस. कानून की संगीन धाराओं में दर्ज एफ.आई.आर. में गंभीर चोट पहुंचाने, दूसरों की सुरक्षा को खतरे में डालने, धमकाने और आपराधिक बल प्रयोग जैसे संगीन अपराध शामिल हैं।

केंद्रीय मंत्री किरन रिजिजू ने कहा है कि संसद शारीरिक ताकत दिखाने की जगह नहीं है। अगर राहुल गांधी की तर्ज पर अन्य सांसद भी शारीरिक हिंसा करें तो फिर क्या होगा जबकि कांग्रेस के सांसदों के आरोप के अनुसार भाजपा सांसदों के हाथों में डंडे थे लेकिन राज्यसभा में विपक्ष के नेता खरगे से दुर्व्यवहार और मारपीट की शिकायत पर अभी तक एफ.आई.आर. दर्ज नहीं हुई। वी.आई.पी. एफ.आई.आर. और सी.सी.टी.वी. फुटेज = आम जनता के मामलों में पीड़ित व्यक्ति या परिवार ही पुलिस में शिकायत और एफ.आई.आर. दर्ज कराते हैं लेकिन संसद मामले में दोनों पक्षों की तरफ से अन्य सांसदों ने एफ.आई.आर. दर्ज कराई। वी.आई.पी. एफ.आई.आर. का बढ़ता चलन लोकतंत्र की सेहत के लिए खतरनाक है।

आरोपी व्यक्ति की आपराधिक मानसिकता के अनुसार ही क्रिमिनल मामलों में एफ.आई.आर. दर्ज होनी चाहिए। राहुल गांधी के खिलाफ हत्या के प्रयास की शिकायत भी दर्ज हुई थी। यह अच्छा हुआ कि दिल्ली पुलिस ने एफ.आई.आर. में वह धारा दर्ज नहीं की। कुछ दिनों पहले बेंगलुरु के ए.आई. इंजीनियर अतुल सुभाष ने आपराधिक मामले से पीड़ित होकर आत्महत्या कर ली थी। सांसदों की तर्ज पर निचले स्तर पर एफ.आई.आर. का प्रचलन बढ़ा तो देश में आपराधिक मुकद्दमों की बाढ़ आ जाएगी।आम मामलों में सी.सी.टी.वी. फुटेज मीडिया को जारी हो जाते हैं। संसद की कार्यवाही का सीधा प्रसारण होता है। इसलिए संसद ड्क्षहसा से जुड़े सभी सी.सी.टी.वी. फुटेज जारी होने चाहिएं जिससे लोकतंत्र के मंदिर में माननीयों के अभद्र आचरण को दोबारा होने से रोका जा सके।

शुरूआती दौर में अपराधियों के सहयोग से विधायक और सांसद चुनाव जीतते थे।'पान सिंह तोमर' जैसी फिल्मों में बताया गया है कि कैसे अपराधी ही संसद में पहुंचने लगे। वर्ष 2006 में जद (यू) और आर.जे.डी. सांसदों के बीच और साल-2009 में सपा के अमर सिंह और भाजपा के आहलूवालिया के बीच हाथापाई हुई थी। फरवरी 2014 में आंध्र प्रदेश पुनर्गठन कानून पर चर्चा के दौरान सांसदों ने सदन में मिर्च स्प्रे फैंका था। इन घटनाओं से साफ है कि शालीन बहस की

बजाय संसद हुड़दंग और आपराधिक घटनाओं का अखाड़ा बनती जा रही है। ड्क्षहसा कर रहे सांसदों के माननीय होने पर भी लोग सवाल खड़े करने लगे हैं लेकिन राज्यों में विधायिकाओं का सालाना लेखा-जोखा बनाने में कुछ अच्छी बातें भी सामने आ रही हैं।

ईज ऑफ लिविंग और छोटे मुकद्दमों की वापसी = राजस्थान सरकार ने पशुवध, पहली बार खनन चोरी, मोटर वाहन कानून के उल्लंघन से जुड़े लघु प्रकृति के मामलों को वापस लेने के लिए राष्ट्रीय लोक अदालत में अर्जी दी है। महीनों से चल रहे छोटे मामले जिनमें आरोपी नियमित हाजिरी लगा रहे हैं, भी वापस होंगे। इनमें सार्वजनिक स्थान में जुआ खेलना, धूम्रपान, तम्बाकू, पशुवध और उग्र सवारी से जुड़े जैसे मामले शामिल हैं। कोरोना काल में लॉकडाऊन के उल्लंघन के लिए महामारी और आपदा प्रबंध कानून के तहत दर्ज लाखों मामलों को खत्म करने के लिए दिल्ली स्थित सैंटर फार अकाऊंटेबिलिटी एंड सिस्टमिक चेंज संस्था ने अनेक प्रयास किए थे। सी.ए.एस.सी. की लीगल रिसर्च के अनुसार राज्यों के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशकों को सूचित किया गया कि आई.पी.सी. की धारा-188 के तहत पुलिस सीधी एफ.आई.आर. दर्ज नहीं कर सकती। सी.ए.एस.सी. के प्रयासों से कई राज्यों में उन छुटपुट मुकद्दमों की वापसी के बाद अब राजस्थान में हो रही पहल काबिले तारीफ है।

'ईज ऑफ लिविंग' और ' ईज ऑफ डूइंग' बिजनैस को सफल बनाने के लिए मध्य प्रदेश विधानसभा में जनविश्वास विधेयक को पारित कर दिया गया है। इसके अनुसार 5 विभागों के 8 अहम कानूनों के 47 प्रावधानों के अनुसार थूकने, धुआं करने, गंदगी फैलाने, नाली पर कब्जा करने जैसे छोटे मामलों पर पैनल्टी की कार्रवाई होगी। इससे प्रशासनिक कार्यकुशलता बढ़ाने के साथ अदालतों का बोझ कम होगा। बड़ी कम्पनियों और विदेशी निवेशकों को लुभाने के लिए सरकारें 'ईज ऑफ डूइंग बिजनैस' का ड्क्षढोरा पीटती हैं। आम जनता को पुलिस और प्रशासन के दमन से बचाने के लिए 'ईज ऑफ लिविंग' के तहत गरीबों और आम जनता को भी राहत जरूरी है। इससे सही मायने में लोगों को सामाजिक न्याय मिलेगा, जो संविधान निर्माता डा. आम्बेडकर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

धड़ल्ले से चल रही अवैध प्लाटिंग, 54 टुकड़ों में बेची जमीन

लीजधारक-बिल्डर पर एफआईआर, आदिवासी भूमि को टुकड़ों में काटकर बेचने पर एक्शन नहीं

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर नगर निगम में भूमि की अफरातफरी, बिना ले-आउट अवैध प्लाटिंग धड़ल्ले से चल रहा है। जिला प्रशासन ने कुदुदंड में लीज की जमीन पर अवैध प्लाटिंग कर उसे 54 टुकड़ों में बेचने वाले लीजधारक भूपेंद्र तामस्कर और बिल्डर राजू गर्ग उर्फ राजेश अग्रवाल के खिलाफ केस दर्ज कराया है।

साथ ही कलेक्टर अवनीश शरण ने शासकीय जमीन को वापस लेने का आदेश भी जारी किया है। करोड़ों रुपए कीमती इस सरकारी जमीन की लीज निरस्त कर वापस इसे राजस्व रिकार्ड में शासकीय भूमि के रूप में दर्ज करने का काम शुरू हो गया है।

वहीं आदिवासी की जमीन पर अवैध प्लाटिंग कर उसे 35 टुकड़ों में बेचने वाले पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। मामला नगर निगम के वार्ड क्रमांक 64 स्थित बिरकोना का है।

आदिवासी की जमीन बेचने पर कार्रवाई नहीं: दरअसल, बिरकोना में 2.81 एकड़ खेतिहर आदिवासी जमीन पर कच्ची प्लाटिंग की जा रही है। इसमें 35 प्लाट काटकर बेच भी दिए गए। निगम ने जब जांच की थी, तब कार्रवाई करने का दावा किया गया था। इस जमीन का न तो ले आउट पास कराया गया है और न ही रेरा में रजिस्ट्रेशन है।

लिहाजा, निगम ने नाली और सड़क को तोड़ने की कार्रवाई भी की थी। इसके साथ ही भूमि के पंजीयन पर रोक के लिए पंजीयन विभाग को पत्र लिखने और जमीन मालिक संजय ध्रुव के खिलाफ एफआईआर कराने का दावा किया गया था, लेकिन अब तक जिला प्रशासन ने कोई कार्रवाई नहीं की है।

बेधड़क चल रहा अवैध प्लाटिंग का खेल: बिरकोना में आदिवासी जमीन के मामले में अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। बताया जा रहा है कि निगम और राजस्व अधिकारियों ने इस मामले से हाथ खींच लिए हैं। जहां भी दबाव पड़ता है, प्रशासन का बुलडोजर कमजोर पड़ जाता है। यही वजह है कि जिस जगह पर निगम ने कार्रवाई की थी, वहां फिर से अवैध प्लाटिंग शुरू हो गई है।

रिश्वत लेते पटवारी और कोटवार गिरफ्तार

ऋण पुस्तिका देने के लिए मांगी थी 90 हजार घूस, एसीबी ने लिया एक्शन

आरोपी – चिन्मय अग्रवाल

आरोपी – भूषण लाल

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ में भ्रष्टाचार के खिलाफ एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) लगातार कार्रवाई कर रही है। मंगलवार को एसीबी ने दुर्ग जिले के पाटन में पटवारी और कोटवार को 20 हजार रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

दरअसल, एसीबी ने सुरपा तहसील पाटन पटवारी चिन्मय अग्रवाल और उसके सहयोगी कोटवार भूषण लाल टेमरी को गिरफ्तार किया है। उनसे पूछताछ की जा रही है। पटवारी ने जमीन के प्रमाणीकरण कर ऋण पुस्तिका देने के नाम पर 90 हजार रुपए रिश्वत की मांग की थी।

पहली किश्त लेते पकड़ाए पटवारी-कोटवार: पाटन के रानीतराई निवासी प्रकाश चन्द्र देवांगन ने एन्टी करप्शन ब्यूरो कार्यालय में शिकायत की गई थी कि, उनकी माता के नाम से ग्राम सुरपा तहसील पाटन में कृषि जमीन खरीदा गया था। जमीन के प्रमाणीकरण कर ऋण पुस्तिका देने के लिए पटवारी चिन्मय अग्रवाल ने 90 हजार रुपए रिश्वत की मांग की थी। प्रार्थी रिश्वत नहीं देना चाहता था, बल्कि आरोपी को रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़वाना चाहता था। शिकायत सही पाने के बाद मोलभाव कर 70 हजार रुपए घूस की रकम देने की सहमति हुई थी। प्रार्थी ने घूस की पहली किश्त 20 हजार की व्यवस्था की और पटवारी चिन्मय अग्रवाल पटवारी, उसके सहयोगी कोटवार भूषण लाल टेमरी को पैसा दिया। जिन्हें एसीबी के अधिकारियों ने रिश्वत लेते दोनों को रंगे हाथों पकड़ा गया।

पाउडर लगे नोट किए गए जब्त: प्रकाश चन्द्र देवांगन ने जो घूस की रकम दी, उस नोट पर एसीबी कार्यालय से पाउडर लगे नोट दिए गए थे। 24 दिसंबर को 2024 की दोपहर जैसे प्रकाशचन्द्र ने कार्यालय जाकर रिश्वत की रकम दी, पीछे से एसीबी की टीम वहां पहुंच गई। उन्होंने दोनों आरोपियों के पास से रिश्वत की रकम को जब्त कर लिया है।

बच्ची की लाश से रेप, हाईकोर्ट ने आरोपी को नहीं दी सजा, कहा- यह अपराध की श्रेणी में नहीं आता, याचिका खारिज

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में कहा कि, कानून में शव के साथ रेप करना अपराध की श्रेणी में नहीं आता। इसलिए इस अपराध के लिए सजा का प्रावधान नहीं है। इस टिप्पणी के साथ हाईकोर्ट ने मृतका बच्ची की मां की याचिका को खारिज कर दी है। दरअसल, 9 साल की मासूम बच्ची की मां ने ट्रायल कोर्ट के उस फैसले को चुनौती दी थी। जिसमें उसकी बेटी के शव के साथ दुष्कर्म करने के आरोपी को सजा नहीं सुनाई थी। लोअर कोर्ट ने इस केस में सिर्फ सबूत मिटाने का दोषी मानते हुए 7 साल की सजा सुनाई थी। हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस बीडी गुरु की डिवीजन बेंच ने कोर्ट के फैसले को सही ठहराते हुए मां की हस्तक्षेप याचिका खारिज कर दी है।

हाईकोर्ट ने माना शव के साथ अपराध नहीं: 9 साल की मासूम के शव के साथ रेप के आरोपी को हाईकोर्ट भी सजा नहीं दे सका। डिवीजन बेंच ने अपने फैसले में कहा कि, मौजूदा स्थिति में देश में जो कानून है, उसमें शव के साथ दुष्कर्म के मामले को अपराध की श्रेणी में नहीं रखा गया है। मौजूदा कानून में नेक्रोफीलिया क्राइम नहीं है। डिवीजन बेंच ने इस केस में ट्रायल कोर्ट के सबूत मिटाने के फैसले को यथावत रखा है।

जानिए क्या है नेक्रोफीलिया: कोर्ट ने अपने फैसले में नेक्रोफीलिया का जिक्र किया है। मेडिकल में नेक्रोफीलिया एक तरह की अजीब बीमारी है। जिसमें पीड़ित व्यक्ति का शव की तरफ यौनाकर्षण होता है। इसमें किसी व्यक्ति की शव के साथ यौन संबंध बनाने की इच्छा होती है। विशेषज्ञों का दावा है कि, दुनिया में इस मानसिक बीमारी के कई मामले सामने आ चुके हैं।

साल 2018 में घर से गायब हो गई थी बच्ची: मासूम बच्ची की हत्या का यह मामला 18 अक्टूबर 2018 की है। गरियाबंद निवासी महिला ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी कि, वो एक अफसर के यहां काम करती थी। घटना के दिन वो काम पर गई थी। घर पर उसकी 9 साल की बेटी और मां थी। काम के बाद दोपहर में जब वह घर आई तब बेटी नहीं मिली। आसपास खोजबीन के बाद रिश्तेदारों और पहचान वालों से भी बेटी की तलाश की, पर वो नहीं मिली।

कहीं पता नहीं चलने पर बच्ची की मां पुलिस के पास गई। जिसके बाद पुलिस ने खोजबीन शुरू की। सुनसान इलाके में बेटी की लाश मिली। पुलिस ने घटनास्थल से खून से सनी मिट्टी समेत अन्य सामान जब्त किया। 22 अक्टूबर 2018 को आरोपी नीलकंठ उर्फ नीलू नागेश को पुलिस ने गिरफ्तार कर पूछताछ की। उसके बताए जगह से पुलिस ने कुदाल, मृतका की एक जोड़ी पायल, घटना के समय आरोपी नीलकंठ की फुल शर्ट समेत अन्य सामान जब्त किया। आरोपी नीलकंठ के बयान के बाद पुलिस ने मुख्य आरोपी नितिन यादव को भी गिरफ्तार कर लिया।

कुएं में डूबने से जुड़वा भाइयों की मौत

मीडिया ऑडीटर, धमतरी निप्र। छत्तीसगढ़ के धमतरी में जुड़वा भाइयों की कुएं में डूबने से मौत हो गई। दोनों सोमवार दोपहर से लापता थे। घंटों छानबीन की गई, लेकिन दोनों जब नहीं मिले तो परिजनों को शक हुआई। तलाश करने पर गांव के ही 30 फीट गहरे कुएं में दोनों की लाश तैरती हुई मिली। मामला कुरूद थाना क्षेत्र का है। ग्राम कोकड़ी में दोपहर में परिजनों ने रोज की तरह दोनों भाइयों को गांव में खेलने छोड़ दिया था। कुछ देर दोनों को खेलते देख परिजन भी बेफिक्र हो गए थे, लेकिन जब घंटों बाद भी बच्चे घर नहीं पहुंचे तो परिजन भी चिंतित हो गए।

परिजनों ने पुलिस को दी सूचना: परिजनों ने गांव के लोगों से भी पूछताछ की, जब दोनों बच्चों का कुछ पता नहीं चला तो परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। सोशल मीडिया में फोटो के साथ नंबर भी जारी किया गया।

ग्रामीणों ने देखी कुएं में लाश: बताया जा रहा है गांव के लोग और परिजन दोनों भाई को ढूंढने में लगे हुए थे, इसी दौरान ग्रामीणों ने गांव के कुएं में दोनों जुड़वा भाई की लाश देखी। ग्रामीणों ने दोनों भाई की लाश को निकाला और पुलिस को सूचना दी।

पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा: बच्चों का नाम होरी लाल साहू (6 साल) और डोमन लाल साहू (6 साल) बताया जा रहा है। पिता डोमेश साहू किसान हैं, इन दोनों जुड़वा भाई के अलावा परिवार में कोई बच्चे नहीं है। एएसपी मणिशंकर चंद्रा ने बताया कि प्रथम दृष्टया लग रहा है कि, खेलते-खेलते दोनों बच्चों की डूबने से मौत हुई है। पुलिस मर्ग कायम कर जांच में पुलिस जुटी हुई है। पोस्टमॉर्टम कर शव को परिजनों को सौंप दिया गया है।

राजस्थान के बगरिया गैंग ने की रायपुर में चोरी

दिनदहाड़े घरों में घुसकर वारदात करना खासियत, डॉक्टर दंपति के घर तोड़े थे 7 ताले

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। राजस्थान का कुख्यात बगरिया गैंग ने रायपुर में डॉक्टर दंपती के घर से 10 लाख से ज्यादा की चोरी की है। इसमें 4 लाख 50 हजार रुपए कैश भी शामिल है। 4 अलमारियों समेत 7 ताले तोड़कर चोरी की गई थी। यह गैंग दिनदहाड़े घरों में घुसकर चोरी करता है। पुलिस ने 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मामला डीडी नगर थाना क्षेत्र के सुंदर नगर का है। डॉ. उमेश चंद्र तिवारी ने डीडी नगर थाने में एफआईआर दर्ज कराई, जिसमें उन्होंने बताया कि वह बालाजी मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर हैं। उनकी पत्नी भी डॉक्टर है। 9 नवंबर को सुबह 8:30 बजे दोनों पति-पत्नी घर पर ताला लगाकर अस्पताल चले गए।

करीब 120 ग्राम के गहने पार: शाम करीब 7 बजे दोनों वापस लौटे तो देखा कि घर के मेन गेट का ताला टूटा हुआ था। अंदर कमरे के दरवाजे का ताला भी टूटा मिला। घर के कमरों में रखी 4 अलमारियों और उसके लॉकर के ताले भी चोरों ने तोड़ दिए थे। डॉ. दंपती ने बताया कि, लॉकर के अंदर रखे सोने-चांदी के करीब 120 ग्राम गहने चोरी हो गए थे। इसमें सोने की चूड़ी, मंगल सूत्र, सिक्का, डायमंड की अंगूठी और चांदी की ज्वेलरी थी। इसके अलावा करीब साढ़े 4 लाख रुपए नगद भी था।

मोबाइल घर पर छोड़कर आते हैं गैंग के मेंबर: पुलिस को शुरुआती जांच पड़ताल में बाहरी गैंग का अंदेशा हुआ। जांच एंटी क्राइम यूनिट के एक्सपर्ट अफसरों को सौंपी गईं। आसपास के सीसीटीवी कैमरे और चोरी के पैटर्न देखने पर राजस्थान अजमेर के आसपास के इलाकों के कुख्यात बगरिया गैंग पर शक हुआ। पुलिस ने टीम राजस्थान भेजी और वहां पूछताछ के बाद तीन आरोपियों को अरेस्ट किया।

3 आरोपी हुए गिरफ्तार: पुलिस ने बताया कि आरोपियों में महावीर बगरिया, कैलाश बागरिया और अमित सोनी है। सभी केकड़ी अजमेर राजस्थान के रहने वाले हैं। हालांकि पुलिस को इन आरोपियों के पास से कोई बड़ा माल या रकम बरामद नहीं हुई है। इस मामले में अन्य आरोपी संजय बगरिया और महेंद्र बागरिया फरार चल रहे हैं। पुलिस इनकी तलाश कर रही है। इस पूरी जांच पड़ताल में डीडी नगर थाना प्रभारी शिवेंद्र राजपूत, एएसआई पीआर धर्मवंशी और एंटी क्राइम यूनिट से एसआई सतीश पुरिया और टीम शामिल थी।

कई राज्यों में है गैंग का खौफ: बगरिया गैंग मूल रूप से राजस्थान का रहने वाला है। यह अजमेर और आस-पास के इलाकों में काफी एक्टिव है। इस गैंग के मेंबर चोरी की वारदात करने से पहले रेकी करते हैं। कई बार वे कुछ सामान बेचने या भिखारी की भूमिका में कॉलोनियों में आते हैं। बताया जा रहा है कि ये कॉलोनियों में घूमकर सूने घरों की तलाश करते हैं। जैसे ही इन्हें कोई टारगेट मिलता है, ये दिन में घर में घुस जाते हैं। फिर वारदात को अंजाम देकर शहर से निकल जाते हैं। यह गिरोह राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र के सीमावर्ती जिलों और छत्तीसगढ़ में वारदात कर चुका है।

प्रयास आवासीय विद्यालयों में प्रवेश हेतु आवेदन प्रारंभ

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। मुख्यमंत्री बाल भविष्य सुरक्षा योजना के तहत प्रदेश के आदिवासी उपयोजना क्षेत्र और नक्सल प्रभावित क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए "प्रयास आवासीय" विद्यालयों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन पत्र आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस योजना के तहत, प्रतिभावान विद्यार्थियों को कक्षा 9वीं से 12वीं तक उत्कृष्ट स्कूली शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने हेतु तैयारी कराई जाएगी। ऑनलाइन आवेदन पत्र भरने की तिथि 19 दिसंबर 2024 से 20 जनवरी 2025 तक एवं ऑनलाइन भरे गए आवेदन पत्र में त्रुटि सुधार: 21 जनवरी 2025 से 27 जनवरी 2025 तक एवं जिला स्तर पर दस्तावेजों का परीक्षणः 28 जनवरी 2025 से 7 फरवरी 2025 तक आवेदन पत्र और अन्य जानकारी के लिए विभागीय वेबसाइट एवं जिला मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के विभागीय वेबसाईट जिले के सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी-भरतपुर से प्राप्त कर सकते हैं।

अवैध शराब और गांजा बेचने वाले पकड़ाए

6 आरोपियों में 2 नाबालिग भी शामिल, कैश-सोना और गाड़ी जब्त, घर भी किया सीज

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग एजेंसी। दुर्ग पुलिस ने अवैध रूप से गांजा और शराब बेचने के आरोप में 2 नाबालिग सहित 6 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से कैश, गांजा और शराब के साथ साथ उनके गहने, गाड़ियों को भी जब्त किया है। मकान को भी सीज कर दिया गया है।

एएसपी दुर्ग अभिषेक झा ने बताया कि मोहन नगर थाना और नारकोटिक्स की टीम ने मिलकर यह कार्रवाई की है। इन्हें मुखबिर से सूचना मिली थी कि नयापारा तीतुरडीह में मेश्राम भवन के पास एक मकान में गांजा और अवैध शराब रखा हुआ है। साथ ही वहां इसे अवैध रूप से बेचा भी जा रहा है।

सूचना मिलते ही पुलिस की एक टीम वहां पहुंची और छापा मार कार्रवाई की। वहां से पुलिस ने सुमन बारेल (22) निवासी तितुरडीह नयापारा दुर्ग, शैलेंद्र पांडेय (24) निवासी सिंधिया नगर दुर्ग, रामबाई बारले, दीपाली बारेल (19) समेत दो नाबालिग को पकड़ा।

घर से गांजा और शराब जब्त: छापामार कार्रवाई के दौरान पुलिस ने घर की तलाशी भी ली। इसमें पुलिस को घर के अंदर से 16.782 किलोग्राम गांजा मिला। इसकी बाजारी कीमत 1.20 लाख रुपए है। यहां से 68200 रुपए नगद भी जब्त किया गया है। इसी तरह बगल के मकान से 150 पौवा देशी शराब भी जब्त की गई है।

इसकी कीमत 15 हजार 120 रुपए बताई जा रही है। पुलिस ने यहां से 15 हजार 820 रुपए नगद जब्त किया है।

गांजा बेचने वालों का मकान किया सीज: पुलिस ने गांजा बेचने के आरोप में सुमन बारले, शैलेंद्र पाण्डेय, रामबाई बारले और दीपाली बारले को गिरफ्तार किया। इनके पास से 1.20 लाख रुपए का गांजा तो जब्त किया ही गया। साथ ही 68,200 रुपए नगद भी जब्त हुआ है।

इसके साथ ही गांजा बिक्री की रकम से खरीदी गई बुलेट, एक्टिवा, सोने की चेन मंगल सूत्र और झुमका भी जब्त किया गया है। ये लोग इसी पैसे से एक आलीशान मकान भी बनवा रहे थे। पुलिस ने उस मकान को भी सीज कर दिया है।

जनदर्शन में आए 31 आवेदन

आम नागरिकों से मिलने वाले आवेदनों का निराकरण समय-सीमा पर करें : कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार अपर कलेक्टर अनिल कुमार सिदार ने आज कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनदर्शन के माध्यम से आम नागरिकों की समस्याओं को सुना। जिले के ग्रामीण जन और नागरिकों ने जनदर्शन में अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं को सीधे अपर कलेक्टर के समक्ष रखा। अपर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को प्राप्त सभी आवेदनों को प्राथमिकता के साथ शीघ्रता से समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। जनदर्शन में आज कुल 31 आवेदन प्राप्त हुए। आज के जनदर्शन में आवेदक छत्रपाल निवासी साल्ही भूमि के संबंध में, राजेंद्र प्रसाद निवासी चिरमिरी कोटवार पद पर पदस्थ करने के संबंध में, सरपंच खैरबना राशन कार्ड में नाम कटवाने के संबंध में, जयराम निवासी बौरीडांड आवेदक रकबा में धान खरीदी के कम टोकन काटने के संबंध में, विजय कुमार निवासी नई लेदरी वोटर लिस्ट में नाम जुड़वाने के संबंध में, किरण बेगा निवासी खड़ाखोह आवास योजना आपूर्ण को पूर्ण कराने के संबंध में, मो0 तालिब हुसैन निवासी मनेंद्रगढ़ विद्युत कनेक्शन लिये जाने के संबंध में, गिरीश चंदेल निवासी मनेंद्रगढ़ हनुमान जी मन्दिर का ताला खुलवाने के संबंध में, राजा निवासी केशडोल भूमि के संबंध में, पवन कुमार सोनकर निवासी मनेंद्रगढ़ सीढ़ी को तोड़ कर मरम्मत करने के संबंध में, बुधलाल निवासी चनवारीडांड मुआवजा राशि को प्राप्त करने के संबंध में, रामाशंकर निवासी नागपुर नामांतरण निवारण के संबंध में, उमेश पाल निवासी नागपुर भूमि के संबंध में, सरपंच निरुआ ग्राम पंचायत नेरुआ के प्रभारी सचिव का प्रभार हटाने के संबंध में, ललिता बाई निवासी मनेंद्रगढ़ शौचालय का पाइप जोड़ दिया गया है उसे हटाने के संबंध में, जमुना प्रसाद निवासी खैरबना राशन कार्ड से नाम कटवाने के संबंध में, दुर्गावती, बसमतिया, लक्ष्मी, सुंदरी निवासी पुटाडांड महतारी वंदन योजना का पैसा न मिलने के संबंध में, राधिका प्रसाद निवासी बरबसपुर धान रकबा संशोधन के संबंध में, मंगल प्रसाद निवासी सरभोका भूमि के संबंध में, विशेष सोनी निवासी मनेंद्रगढ़ झगराखण्ड मे एटीएम मशीन चालू करवाने के संबंध में, मो0 जलील निवासी झगराखण्ड दाखिल खारिज प्राप्त करने के संबंध में, शिव प्रसाद निवासी आमगाँव पारिश्रमिक का भुगतान कराने के संबंध में, हरे कृष्ण कुमार निवासी उजियारपुर शौचालय निर्माण की भुगतान कराने के संबंध में, श्यामवती निवासी खाड़खोह आवास योजना आपूर्ण को पूर्ण कराने के संबंध में, दुर्गा प्रसाद गुप्ता निवासी मनेंद्रगढ़ लीज नवीनीकरण कराये जाने के संबंध में, महेश सिंह निवासी गढ़वार भूमि के संबंध में, दशमतिया निवासी सेमरा कार्यवाही की जानकारी प्रदान करने के संबंध में, अंजनी कुमार निवासी डोगरीटोला भूमि के संबंध में, राम कुमार निवासी जैती धान रकबा ज़ीरो हो जाने के संबंध में, रमेशचंद्र सिंघल निवासी मनेंद्रगढ़ नाली निर्माण के संबंध में, अपना शिकायत लेकर उपस्थित हुए थे। कलेक्टर ने प्राप्त सभी आवेदनों को पूरी गंभीरता से सुनते हुए संबंधित विभागों को उचित कार्यवाही करते हुए त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए।

एमसीबी में चुनाव प्रक्रिया को सुचारू बनाने हेतु कलेक्टर ने दिए निर्देश

सरपंच और पंचों का आरक्षण जनपदों में तथा जिला पंचायत सदस्य, जनपद अध्यक्ष तथा जनपद सदस्यों का आरक्षण कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में किया जायेगा

साप्ताहिक समय-सीमा बैठक संपन्न

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट की अध्यक्षता में कलेक्टर कार्यालय के सभा कक्ष में साप्ताहिक समय-सीमा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में विभिन्न बिंदुओं की समीक्षा की गई, जिसमें विभागीय महत्वपूर्ण पत्रों, पिछले लंबित मुद्दों, डीएमएफ कार्यों की प्रगति तथा आगामी बैठक में शामिल होने वाले प्रस्तावों पर चर्चा की गई और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। समय-सीमा में प्राप्त आवेदनों की समीक्षा करते हुए उनके निराकरण हेतु सभी विभागों को निर्देश दिए।

कलेक्टर ने बताया कि 28 दिसंबर को सरपंच और पंचों के आरक्षण का निर्धारण जनपदों में तथा 29 दिसंबर 2024 को जिला पंचायत सदस्य, जनपद अध्यक्ष तथा जनपद सदस्यों का आरक्षण कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में किया जाना है। उन्होंने सभी जनपदों में छुट्टी निरस्त करने के निर्देश दिये है। उन्होंने खनिज अधिकारी से जनपदों में कर्मचारियों के लिए परिवहन की व्यवस्था की जानकारी ली। इसके पश्चात कलेक्टर ने स्वास्थ्य विभाग को अपने विभाग के कार्यों को फॉलोअप करने के निर्देश दिये। उन्होंने समस्त विभागों को अपने विभागों लंबित कार्यों का लगातार फॉलोअप करने के निर्देश दिये। उन्होंने अनुकम्पा नियुक्ति के लंबित प्रकरणों की जानकारी प्रस्तुत करने कहा। इसके साथ ही विभागीय कर्मचारियों का कौशल परीक्षा के माध्यम से कौशल मानदेय हेतु जानकारी उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने श्रम विभाग को मनेंद्रगढ़ तथा भरतपुर में 5 रूपये अन्नपूर्णा दाल भात सेंटर प्रारंभ करने के निर्देश दिये। जिससे मजदूरी करने वालों उचित मूल्य पर अच्छा खाना उपलब्ध हो सके। महिला एवं बाल विकास विभाग ने बताया कि उनके विभाग के माध्यम से गैस कनेक्शन देने का कार्य प्रारंभ किया जाना है। इसके साथ ही महिला एवं बाल विकास विभाग ने शिक्षा विभाग एवं ट्राइबल विभाग के सहयोग की अपेक्षा की है कि 2 जनवरी तक अदम्य साहस दिखाने वाले बच्चों को वीरता पुरस्कार दिया जाना है उसके लिए सहयोग करें। कलेक्टर समस्त एसडीएम को निर्देश दिये हैं कि जहां पर भी बैंक खुलना है वहां पर पर्याप्त मात्रा में पार्किंग के स्थानों का चिन्हांकन करने के पश्चात ही बैंक खोलने की अनुमति दे। उन्होंने चिरमिरी तथा कोटाडोल में रेस्ट हाउस की जानकारी लेते हुए भरतपुर में एसडीओपी ऑफिस के संचालन के लिए अतिरिक्त कक्ष तथा कार्यालय के लिए स्थान का निर्धारण करने के निर्देश दिये। उन्होंने विभिन्न विभागों को आवंटित भूमि की स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने जल संसाधन विभाग के अधिकारी को जिले समस्त जलाशयों का भ्रमण कर उनकी अद्यतन जानकारी प्रस्तुत करने के निर्देश दिये।

इस बैठक में अपर कलेक्टर अनिल सिदार, एसडीएम प्रवीण कुमार भगत, लिंगराज सिदार, डिप्टी कलेक्टर प्रीतेश सिंह राजपूत, तहसीलदार, सर्व जनपद सीईओ, नगर पंचायत सीएमओ, जिला अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

जम्मू-कश्मीर में आर्मी वैन 150 फीट गहरी खाई में गिरी

पुंछ (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पूंछ जिले में मंगलवार शाम आर्मी वैन 150 फीट गहरी खाई में गिर गई। वैन में 18 जवान सवार थे। घटना पुंछ जिले के मेंढर के बलनोई इलाके की है। जवान नियंत्रण रेखा की ओर जा रहे थे। आर्मी ने जवानों की तलाश में रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू कर दिया है। सभी जवान 11 मराठा रेजिमेंट के हैं। इससे पहले जम्मू-कश्मीर के राजौरी में 17 सितंबर की रात सेना का अर्माडा वाहन खाई में गिर गया था। इस घटना में 4 जवान घायल हुए थे। यह घटना पहाड़ी जिले के मंजाकोट इलाके की थी। साल 2023 में लद्दाख में 9 जवानों की मौत हुई थी लद्दाख में 19 अगस्त को सेना की एक गाड़ी 60 फीट खाई में गिर गई थी, जिसमें 9 जवानों की मौत हो गई थी। सेना के काफिले में पांच गाड़ियां शामिल थीं। जिसमें 34 जवान सवार थे। इस हादसे में एक जवान घायल भी हुआ। लेह के स्स्कपीडी नित्या ने बताया कि वाहन के ड्राइवर ने गाड़ी पर कंट्रोल खो दिया। जिससे ट्रक खाई में जा गिरा। 29 अप्रैल 2023 को जम्मू-कश्मीर के राजौरी में सेना की एंबुलेंस सड़क से फिसलकर 200 फीट गहरी खाई में गिर गई थी। इस हादसे में दो जवानों की मौत हो गई थी। वहीं, 2 जवान घायल भी हुए थे। यह हादसा लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के पास केरी सेक्टर में हुआ था। हादसें में मरने वाले जवानों की पहचान बिहार के हवलदार सुधीर कुमार और राजौरी के परमवीर शर्मा के रूप में हुई थी।

शिमला में सड़कों पर 3 इंच बर्फ

नई दिल्ली/भोपाल/जयपुर/लखनऊ (एजेंसी)। देश के 3 राज्यों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बर्फबारी का दौर जारी है। बर्फबारी के चलते हिमाचल में दो नेशनल हाईवे समेत 30 सड़कें बंद हो गई हैं। शिमला में सीजन की दूसरी बर्फबारी हुई, जिससे सड़कों पर 3 इंच बर्फ की परत जम गई। इससे सोलंगनाला से अटल टनल रोहतांग लौट रहे टूरिस्ट की गाड़ियां सड़क पर फिसलने लगीं। देर रात तक 1000 से ज्यादा गाड़ियां अटल टनल के साउथ पोर्टल से नॉर्थ पोर्टल तक बर्फ में फंसीं। पुलिस ने गाड़ियां निकालने के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया। उत्तराखंड में भी गढ़वाल हिमालय में बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री और हेमकुंड साहिब तथा कुमाऊं में मुनस्यारी में ताजा बर्फबारी हुई

कथा श्रवण से मिलती है जीवन दर्शन की राह-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि सनातन संस्कृति का अपना विशेष महत्व है। मनुष्य जीवन सत्कर्म के लिए प्राप्त हुआ है। कथा श्रवण के माध्यम से हमें जीवन दर्शन की राह मिलती है, जो हमें सदमार्ग की ओर चलने के लिए सदैव प्रेरित करती है। गौमाता की सेवा भगवान की सेवा के समान है। संत कमल किशोर नागर महाराज गौसेवा के एक बड़े संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे है। संत श्री के प्रयासों से मालवा, निमाड़, जनजाति अंचल सहित प्रदेश भर में गौमाताओं के पालन का दायित्व निस्वार्थ भाव से किया जा रहा है, जो प्रशंसनीय और वंदनीय है।

भगवत गीता से हमें कर्म के प्रति आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है, इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति ऐसे सदकर्म करें, जिससे उनकी भावी पीढ़ी पुण्य के मार्ग पर चले और मनुष्य जीवन को सार्थक बनाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को इंदौर जिले के सांवेर स्थित चित्तौडा में श्रीमद्भागवत गौशाला में आयोजित भागवत कथा में उपस्थित श्रृद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्रीमद्भागवत गौशाला चित्तौडा की भूमि को गौशाला के नाम करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा गीता जयंती के आयोजन से पूरे

प्रदेश में भगवान श्रीकृष्ण के कर्म के संदेश को पहुंचाने का कार्य किया गया है।

संत श्री कमल किशोर जी नागर के द्वारा निस्वार्थ भाव से गौशाला संचालन के लिए जो पुनीत कार्य की अलख जगाई गई है, वह वंदनीय है। संत श्री ने गौशाला संचालन के साथ कई आदर्श निर्मित किए हैं, जो समाज को एक नई दिशा देने का कार्य कर रहे है। उन्होंने प्रदेश के जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट के प्रयासों की भी सराहना की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में नदी जोड़ो अभियान विकास को एक नई दिशा देने का काम करेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी 25 दिसम्बर को केन-बेतवा नदी जोड़ो अभियान के माध्यम से विकास को एक नई दिशा देंगे। उन्होंने कहा प्रदेश में दो नदी जोड़ो अभियान से लगभग 25 जिलों के बड़े क्षेत्रों में सिंचाई का रकबा बढ़ेगा, जिससे मालवा और बुंदेलखंड क्षेत्र की तस्वीर और तकदीर बदलेगी। नदी जोड़ो अभियान से प्रदेश का बड़ा क्षेत्र लाभान्वित होगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार ने गोवंश पालन को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयास किए हैं। घर-घर गोपाल और गांव-गांव वृंदावन बने, इसके लिए प्रदेश के 313 ब्लॉक के एक-एक गांव में जहां 500 से अधिक गोवंश होगा, उनको वृंदावन गांव बनाकर आदर्श रूप में विकसित करेंगे। वहीं 10 से अधिक गौमाता पालने वाले पशुपालकों को अनुदान देकर प्रोत्साहित करेंगे ताकि घर-घर गोपाल बने।

उन्होंने कहा कि आने वाले समय में दूध खरीदी पर बोनस भी दिया जाएगा। हमारा लक्ष्य कि जिससे घर-घर दूध उत्पादन बढ़े और प्रदेश दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में गोपालन के प्रति लोगों में रुचि बढ़े, इसके लिए विशेष प्रयास किए जा रहे है। उन्होंने संत कमल किशोर जी नागर द्वारा गोवंश संरक्षण एवं गौशाला के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की।

राहुल गांधी दिल्ली की सब्जी मंडी पहुंचे

दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी दिल्ली की सब्जी मंडी पहुंचे। इसका वीडियो उन्होंने मंगलवार सुबह शेयर किया। सब्जी मंडी में राहुल कुछ महिलाओं से बात करते नजर आए। उन्होंने केंद्र की नीतियों की आलोचना की। राहुल ने कहा- लहसुन की कीमत 40 रुपए से 400 रुपए पहुंच गई है। जनता महंगाई से परेशान है। केंद्र सरकार कुंभकरण की नींद सो रही है। राहुल ने आगे कहा- आम जनता को अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए छोटे-छोटे सामानों पर समझौता करना पड़ रहा है। इस पर राहुल के साथ खड़ी एक महिला ने कहा- सोना सस्ता हो गया, लेकिन लहसुन महंगा है। राहुल ने कहा कि कुछ दिन पहले मैं एक सब्जी बाजार गया था और ग्राहकों के साथ खरीदारी करते हुए मैंने उनसे यह जानने की कोशिश की कि आम लोगों का बजट कैसे बिगड़ रहा है और महंगाई ने कैसे सभी को परेशान किया है। मैंने लहसुन, मटर, मशरूम और दूसरी सब्जियों के दामों पर चर्चा की और

लोगों के असली अनुभवों को सुना। 400 रुपए किलो लहसुन और 120 रुपए किलो मटर ने सभी के बजट को हिला दिया है। लोग क्या खाएंगे और क्या बचाएंगे, यह सोचने वाली बात है। राहुल ने कहा कि लोगों के लिए बचत करना मुश्किल हो गया है। कुछ लोगों के लिए तो रिक्शे के किराए से लेकर खाने का खर्च पूरा करना भी कठिन हो गया है।

चुनाव नियमों में बदलाव को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस का कहना है कि चुनाव आयोग को ऐसे महत्वपूर्ण कानून (चुनाव संचालन नियम, 1961) में एकतरफा संशोधन करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। कांग्रेस ने मंगलवार को चुनाव से जुड़े इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट्स पब्लिक करने से रोकने के नियम को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। केंद्र सरकार ने 20 दिसंबर को पोलिंग स्टेशन के सीसीटीवी, वेबकास्टिंग फुटेज और उम्मीदवारों की वीडियो रिकॉर्डिंग जैसे कुछ इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट्स को पब्लिक करने से रोकने के लिए चुनाव नियमों में बदलाव किया था। याचिका पर कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा- चुनाव आयोग को ऐसे महत्वपूर्ण कानून (चुनाव संचालन नियम, 1961) में एकतरफा संशोधन करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। नियमों में बदलाव के बाद 21 दिसंबर को रमेश ने कहा था- चुनाव आयोग पारदर्शिता से इतना डरता क्यों है। आयोग के इस कदम को जल्द ही कानूनी चुनौती दी जाएगी।

चंडीगढ़ निगम में कांग्रेस-भाजपा पार्षदों में हाथापाई

चंडीगढ़ (एजेंसी)। चंडीगढ़ नगर निगम की हाउस मीटिंग में मंगलवार को कांग्रेस और भाजपा के पार्षद भिड़ गए। इसकी शुरुआत तब हुई, जब कांग्रेस पार्षदों ने मेयर चुनाव के वक्त वोट काउंटिंग में गड़बड़ी के आरोपी नॉमिनेटेड पार्षद अनिल मसीह को वोट चोर कहना शुरू कर दिया। इसके विरोध में मसीह वेल में आए और कहा कि राहुल गांधी भी जमानत पर हैं। इससे कांग्रेसी पार्षद भड़क उठे। उन्होंने अनिल मसीह के लिए वोट चोर के नारे लगाते हुए पोस्टर लहराने शुरू कर दिए।

यह देख भाजपा पार्षदों ने कांग्रेस के पार्षदों के हाथ से

अनिल मसीह को वोट चोर कहने वाले पोस्टर छीन लिए। दोनों तरफ से विवाद इतना बढ़ा कि कांग्रेसी पार्षद गुरप्रीत और सीनियर डिप्टी मेयर कुलजीत सिंह संधू के बीच बहस होने लगी।

इससे बवाल ज्यादा बढ़ा और दोनों पक्षों के बीच हाथापाई हो गई। हंगामा बढ़ते देख हाउस की मीटिंग को स्थगित कर दिया गया।

दिल्ली में बांग्लादेशियों की फेक आईडी बनाने वाले 11 गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस ने मंगलवार को फेक आईडी और डॉक्यूमेंट्स बनाने वाले 11 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें 5 बांग्लोदशी और 6 स्थानीय लोग हैं। ये लोग अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों को फर्जी डॉक्यूमेंट्स जैसे- वोटर आईडी, आधार कार्ड के जरिए दिल्ली में बसाते थे। दक्षिणी दिल्ली के ष्ठष्टक्र अंकित चौहान ने बताया- गिरफ्तार लोगों से फर्जी आधार कार्ड, वोटर ढ्ढष्ठ, पासपोर्ट बरामद हुए हैं। ये लोग वेबसाइट के जरिए फर्जी डॉक्यूमेंट्स बनाते थे। वेबसाइट रजत मिश्रा चलाता था। गिरफ्तार लोगों में एक महिला भी शामिल है, जिसने फर्जी आधार से वोटर कार्ड बनवाया था। अब तक 1 हजार से अधिक बांग्लादेशियों की पहचान की गई है। डीसीपी चौहान ने बताया कि हत्या के मामले में 4 संदिग्धों को भी गिरफ्तार किया गया है। वे भी बांग्लादेश से आए थे और फर्जी दस्तावेजों के जरिए रह रहे हैं। दिल्ली में उन्होंने कंप्यूटर सेंटर पर साहिल नाम के व्यक्ति से संपर्क किया, जिसने उनके लिए फर्जी जन्म प्रमाण पत्र बनाए। उपराज्यपाल के निर्देश पर कार्रवाई शुरू की गई दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने 10 दिसंबर को मुख्य सचिव और पुलिस आयुक्त को दिल्ली में अवैध तौर पर रह रहे बांग्लादेशी अप्रवासियों की पहचान करके सख्त कार्रवाई करने के लिए 2 महीने का खास ऑपरेशन शुरू करने का निर्देश दिया था।

कांग्रेस बोली- मानवाधिकार आयोग में नियुक्तियां पहले से तय थीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जस्टिस वी रामासुब्रमण्यन को सोमवार को राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग अध्यक्ष नियुक्त किया। अब कांग्रेस ने उनकी नियुक्ति पर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस की ओर से जारी किए गए नोट में कहा गया है कि एनएचआरसी के चेयरपर्सन की सिलेक्शन कमेटी में लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और राज्यसभा में

विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे भी थे, लेकिन उनकी राय को गंभीरता से नहीं लिया गया। कांग्रेस ने कहा कि चयन समिति की बैठक बुधवार को हुई थी, लेकिन यह पहले से निर्धारित एक्सरसाइज थी। इसमें एक-दूसरे की सहमति लेने की परंपरा को नजरअंदाज कर दिया गया। ऐसे मामलों में यह आवश्यक होता है।

यह निष्पक्षता के प्रिंसिपल को कमजोर करता है, जो चयन समिति की विश्वसनीयता के लिए महत्वपूर्ण है।

कोलकाता रेप-मर्डर, फोरेंसिक रिपोर्ट से आया ट्विस्ट

जिस गद्दे पर ट्रेनी डॉक्टर का शव था, उस पर संघर्ष के सबूत नहीं

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में ट्रेनी डॉक्टर से रेप-मर्डर केस में सेंट्रल फोरेंसिक साइंस लेबोरेट्री (ष्टस्रस्रु) की एक रिपोर्ट सामने आई है। जिसमें कई सनसनीखेज खुलासे हैं। 12 पेज की रिपोर्ट में कहा गया है कि सेमिनार रूम में ऐसा कोई सबूत नहीं मिला, जिससे पता चले कि वहां पीड़ित से रेप के बाद हत्या की गई है। रिपोर्ट के 12वें पेज की आखिरी लाइनों में लिखा है- जिस जगह ट्रेनी डॉक्टर का शव मिला था, वहां संघर्ष का कोई सबूत नहीं मिला। जिस गद्दे पर शव था, उस पर भी किसी तरह की हाथापाई के निशान नहीं मिले हैं। इससे अब ये सवाल खड़े हो रहे हैं कि क्या ट्रेनी डॉक्टर का रेप-मर्डर कहीं और हुआ था। गद्दे पर सिर और पेट के नीचे ही खून के निशान मिले थे, इससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि शव कहीं और से लाया गया था। मामले की जांच सीबीआई कर रही है। मुख्य आरोपी संजय रॉय पुलिस की हिरासत में हैं। एजेंसी 7 अक्टूबर को ही स्पेशल सीबीआई कोर्ट में चार्जशीट दाखिल कर चुकी है।

खनौरी समेत कई जगह निकाला कैंडल मार्च, डल्लेवाल का समर्थन

शंभू-खनौरी बॉर्डर (पटियाला/संगरूर)। संयुक्त किसान मोर्चा (स्थरू) शंभू और खनौरी बॉर्डर के आंदोलन में अभी शामिल नहीं होगा। किसान नेताओं की चंडीगढ़ में पौने 4 घंटे तक चली मीटिंग यह फैसला हुआ है। किसान नेताओं का कहना है कि हमारी तरफ से एकता के लिए लगातार प्रयास जारी है। हमें अभी एक फोरम से ही चिट्?ठी मिली है। किसान नेता प्रेम सिंह भंगू ने कहा कि हम जनवरी के पहले हफ्ते इसी मुद्दे को लेकर देश के राष्ट्रपति या कृषि मंत्री से मुलाकात की जाएगी। आगे भी इस मुद्दे को लेकर मीटिंग की जाएगी। वहीं, उन्होंने पंजाब और केंद्र सरकार के अड़ियल रवैये की निंदा की है। वहीं, डल्लेवाल को आज 4 दिनों बाद खनौरी बॉर्डर पर चल रहे मोर्चे में शीशे के केबिन में लाया गया। उन्होंने सभी राज्यों को एकजुट होने का संदेश दिया। इससे पहले किसान आंदोलन को लेकर पंजाब सीएम भगवंत मान का भी बड़ा बयान आया है। उन्होंने कहा कि, केंद्र को जिद छोड़कर किसानों से बात करनी चाहिए। सीएम मान ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट ङ्क पर लिखा है कि केंद्र सरकार को अपनी पुरानी जिद छोड़कर किसान संगठनों से बातचीत का रास्ता खोलना चाहिए। कबूतर की आंखें बंद करने बिल्ली नहीं भागती है। उन्होंने कहा कि पता नहीं केंद्र सरकार कौन सी तपस्या कर रही है। अगर मोदी जी रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध रुकवा सकते हैं तो क्या वे 200 किलोमीटर दूर बैठे किसानों से बात नहीं कर सकते?

आप किस समय का इंतजार कर रहे हैं? इससे पहले भी एक बार लुधियाना में नगर निगम चुनाव में उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की थी कि केंद्र को किसानों से बातचीत करनी चाहिए।

वहीं, बीजेपी नेता हरजीत सिंह ग्रेवाल का कहना है कि मुलाकात तो सीएम भगवंत मान ने करवानी है, वह पहल करे। वहीं, खनौरी बॉर्डर, अंबाला समेत कई जगह पर आज डल्लेवाल के मरण व्रत के समर्थन में कैडल मोर्च निकाला गया। जिसमें काफी संख्या में लोग शामिल हुए।

अल्लू अर्जुन से 3 घंटे से ज्यादा पूछताछ हुई

हैदराबाद। पुष्पा-2 के प्रीमियर के दौरान भगदड़ केस में पुलिस ने मंगलवार को अल्लू अर्जुन से 3 घंटे से ज्यादा पूछताछ की। हैदराबाद सेंट्रल जोन डीसीपी के नेतृत्व वाली टीम ने एक्टर से सवाल किए। अल्लू अर्जुन से पूछा गया कि क्या वे घटनास्थल पर मौजूद थे। उन्होंने हालात कैसे संभाले? इस पर उन्होंने कहा- मुझे महिला की मौत की जानकारी अगले दिन मिली। जानकारी के मुताबिक पुलिस घटना का सीन भी री-क्रिएट कर सकती है। अल्लू सुबह 11 बजे चिक्कड़पल्ली पुलिस स्टेशन पहुंचे थे। उनसे दोपहर 2.45 बजे तक पूछताछ चली। इस दौरान स्टेशन में भारी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी और स्टेशन के रास्तों को ब्लॉक किया गया था। अल्लू को 23 दिसंबर पुलिस ने नोटिस जारी कर पेश होने का कहा था। इधर 4 दिसंबर को संध्या थिएटर में हुई घटना का एक और वीडियो सामने आया। इसमें सीढ़ियों से भीड़ उतरती नजर आ रही है। 15 सेकेंड के इस वीडियो के 8वें सेकेंड पर कुछ लोग एक बदहवास शख्स को बाहर ले जाते नजर आ रहे हैं।

1. अल्लू अर्जुन, पुष्पा-2 मूवी लीड हीरो 2. माइथ्री मूवीज के प्रोड्यूसर 3. फरवाज, बॉडीगार्ड 4. संतोष, अल्लू अर्जुन के पीए 5. सरथबन्नी, अल्लू अर्जुन के मैनेजर 6. रमेश और राजू, सुरक्षा टीम 7. पेडारामिरेड्डी और चिन्नारामी रेड्डी, थिएटर मालिक 8. एम. संदीप, सुमित, विनय, आशुतोष रेड्डी, रेणुकादेवी, अरुणा रेड्डी (थिएटर पार्टनर) 9. नागराजू, थिएटर मैनेजर 10. विजयचंदर, निचली बालकनी मैनेजर 11. विनय कुमार,अल्लू अर्जुन फैंस एसोसिएशन अर्जुन के रिश्तेदारों को पुलिस ने अलर्ट किया

पुलिस ने अल्लू अर्जुन के रिश्तेदारों को अलर्ट किया है। साथ ही एक्टर के घर के बाहर बैरिकेडिंग भी कर दी गई है, ताकि 22 दिसंबर जैसी घटना दोबारा न हो।

ज्ञान-विज्ञान का अनूठा संगम लाला रामस्वरूप जी. डी. एंड संस पंचांग

जबलपुर। संस्कार, शिक्षा सहित जीवन के महत्वपूर्ण पलों को शुभ फलदायी बनाते सटीक शुभमुहूर्त, तिथियों व नक्षत्रों की सटीक गणना। भविष्य का आईना दिखाते राशिफल। कुंडली मिलान, ग्रह नक्षत्र की दशा यानी पंचांग की बारीक से बारीक खूबी को समेटे लाला रामस्वरूप जी. डी. एंड संस पंचांग वर्ष 2025 में और भी खूबियॉ लेकरआया है। इसमें आयकर विवरणी से जुड़ी अनेक जानकारी के साथ ही राशिफल के अनुसार पूरी दुनिया पर पढ़ने वाले प्रभावों की जानकारी एवं सटीक भविष्यवाणी जो सही सिद्ध हुई पंचांग में समाहित की गई है।अपनी इन्हीं खूबियों के चलते जबलपुर से प्रकाशित लाला रामस्वरूप जी. डी. एंड संस पंचांग हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी न सिर्फ भारत बल्कि विदेशों मे भी भारतीय परिवारों की पहली पसंद बना हुआ है ।

पंचांग में शासकीय ऐच्छिक अवकाश की एक-एक जानकारी दी गई है ।जिसकी मदद से आप पहले से ही परिवार सहित छुट्टियाँ प्लान कर सकते हैं । विषय विशेषज्ञों, भविष्यवक्ताओं की निगरानी मे तैयार किया गया यह पंचांग उपभोक्ताओं की विश्वसनियता पर लगातार खरा उतरा है।

लाला रामस्वरूप जी. डी. एंड संस के अग्रवाल बंधुओं ने पंचांग के बारे मे जानकारी देते हुए बताया कि वर्ष 2025 के लिए यह पंचांग नये कलेवर और आकर्षक प्रिंटिंग के साथ बाजार मे आ चुका है।

ईशान किशन और ऋतुराज गायकवाड़ ने मचाया तूफान, चैंपियंस ट्रॉफी से पहले ठोका शतक

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय घरेलू क्रिकेट की सबसे बड़े वनडे टूर्नामेंट विजय हजारे ट्रॉफी खेली जा रही है। इस मैच में पूरे देश के खिलाड़ी अपनी प्रतिभा को आजमा रहे हैं। इसी बीच टीम इंडिया से काफी समय से बाहर चल रहे स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन और उभरते सितारे रुतुराज गायकवाड़ ने सोमवार को खेले गए मैचों में जबरदस्त शतक ठोके हैं।

भारतीय टीम से पिछले करीब एक साल से बाहर चल रहे ईशान किशन ने झारखंड़ की अपनी घरेलू टीम के लिए तूफानी शतक लगाया, तो वहीं टीम इंडिया में बार-बार नजरअंदाज किए जाने वाले ऋतुराज गायकवाड़ ने भी सेलेक्टर्स को प्रभावित करते हुए महाराष्ट्र की टीम के लिए धमाकेदार शतक के साथ ही अपना दावा मजबूती के साथ टोका है।

विजय हजारे ट्रॉफी 2024-25 का राउंड-2 में महाराष्ट्र और सर्विसेज का मैच मुंबई में खेला गया। सोमवार को खेले गए इस मैच में महाराष्ट्र की टीम ने सर्विसेज को सिर्फ 2024 रन के स्कोर पर ऑल आउट कर दिया। इसके

बाद महाराष्ट्र की कप्नी कर रहे ऋतुराज ने विस्फोटक अंदाज में बल्लेबाजी की। उन्होंने इस मैच में छक्कों की बारिश करते हुए सिर्फ 74 गेंद में 200 की स्ट्राइक रेट से 148 रन की नाबाद पारी खेली। उन्होंने अपनी इस पारी के दौरान 16 चौके और 11 गगनचुंबी छक्के लगाए। इस पारी के दम पर महाराष्ट्र ने इस मैच को 21वें ओवर में ही 9 विकेट से जीत लिया।

वहीं इस टूर्नामेंट में दूसरी तरफ झारखंड का सामना जयपुर में स्थित डॉ सोनी स्टेडियम में मणिपुर के साथ हुआ। इस मैच में मणिपुर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 7 विकेट खोकर 253 रन का स्कोर बनाया। इसके बाद झारखंड की टीम टारगेट को हासिल करने उतरी। उन्होंने सलामी बल्लेबाज और कप्तान ईशान किशन की दमदार पारी से एकतरफा अंदाज में हासिल कर लिया। ईशान ने 78 गेंद में 16 चौके और 6 छक्कों से 134 रन बनाकर आउट हुए। उनकी इस पारी और उत्कर्ष सिंह के 68 रन के योगदान से झारखंड ने मैच को 28.3 ओवर में 8 विकेट से जीत लिया।

पूर्व क्रिकेटर विनोद कांबली की तबीयत बिगड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के पूर्व क्रिकेटर विनोद कांबली पिछले कुछ दिनों से स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं। कांबली की तबियत एक बार फिर से बिगड़ गई है। जिसके बाद उन्हें ठाणे के आकृति अस्पताल में भर्ती कराया गया है। डॉक्टर्स फिलहाल उनकी देखभाल कर रहे हैं। हाल ही में विनोध कांबली का एक सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुआ था। इस वीडियो में वह सचिन तेंदुलकर के साथ नजर आए थे, जिसमें वह काफी बीमार दिख रहे थे। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है। जिसमें कांबली हॉस्पिटल में एडमिट नजर आ रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, उनके सभी जरूरी टेस्ट किए जाने रहे हैं और उनकी हालत चिंताजनक बनी हुई है। कांबली ने हाल ही में एक यूट्यूब चैनल पर इंटरव्यू दिया था कि वो गंभीर यूरिन इंफेक्शन से जूझ रहे हैं, जिसकी वजह से पिछले महीने बेहोश हो गए थे और वीडियो वायरल हो गया था। बता दें कि, कांबली को कई तरह की बीमारियां हैं उन्हें हार्ट अटैक भी आ चुका है। वहीं विनोद कांबली के इंटरनेशनल करियर की शुरुआत 1991 में वनडे से हुई थी। इसके बाद उन्होंने टीम इंडिया के लिए टेस्ट डेब्यू 1993 में किया था। उन्होंने अपने इंटरनेशनल करियर के दौरान टीम इंडिया के लिए कुल 17 टेस्ट और 104 वनडे मैच खेले हैं।

क्रुणाल पंड्या ने बल्ले से मचाई तबाही

नई दिल्ली (एजेंसी)। विजय हजारे ट्रॉफी 2024 में बड़ौदा ने कमाल किया है। दरअसल, बड़ौदा ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 400 रनों का आंकड़ा पार कर लिया है। इस दौरान कप्तान क्रुणाल पंड्या ने विस्फोटक बैटिंग की। इस दौरान उन्होंने नाबाद 80 रन बनाए। क्रुणाल की इस पारी में 7 चौके और 3 छक्के भी शामिल रहे। उनके साथ-साथ निनाद अश्विनकुमार ने भी कमाल किया। अश्विन कुमार ने शतक जड़ा दिया। बता दें कि, बड़ौदा टीम केरल के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करने उतरी। उसने इस दौरान 50 ओवरों में 4 विकेट के नुकसान के साथ 403 रन बनाए। इस दौरान क्रुणाल नंबर चार पर बल्लेबाजी करने आए। उन्होंने 54 गेंदों का सामना करते हुए नाबाद 80 रन बनाए। क्रुणाल ने 7 चौके और 3 छक्के भी जड़े जिसके बाद उनकी इस विस्फोटक पारी से बड़ौदा को बड़े स्कोर तक पहुंची। बड़ौदा के लिए निनाद और शाश्वत राव ओपनिंग करने आए। इस दौरान निनाद ने 99 गेंदों में 136 रन बनाए। निनाद ने 19 चौके और 3 छक्के जड़े। उनके साथ विष्णु सोलंकी ने भी दमदार पारी खेली। उन्होंने 46 रनों का योगदान दिया। पार्थ कोहली ने 72 रनों का योगदान दिया। भानू पूनिया ने नाबाद 37 रन बनाए। इस तरह बड़ौदा ने 50 ओवरों में 4 विकेट के नुकसान के साथ 403 रन बनाए। क्रुणाल पंड्या ने विजय हजारे ट्रॉफी में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में कई खिलाड़ियों को पीछे छोड़ दिया।

इस दिन होगा भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबला

नई दिल्ली (एजेंसी)। लंबे इंतजार के बाद आईसीसी कभी भी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का शेड्यूल जारी कर सकता है। ये टूर्नामेंट अगले साल फरवरी-मार्च में खेला जाएगा। वहीं इसकी मेजबानी पाकिस्तान करने जा रहा है हालांकि, ये टूर्नामेंट हाइब्रिड मॉडल से खेला जाएगा। वहीं भारत के मैच दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले जा सकते हैं। लेकिन इससे पहले चैंपियंस ट्रॉफी के रिकॉर्ड पर एक नजर डालते हैं। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में सबसे सफल टीमें भारत और ऑस्ट्रेलियाई टीम हैं। दोनों टीमों ने 2-2 बार आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी का खिताब जीता है, लेकिन चैंपियंस ट्रॉफी में सबसे ज्यादा मैच जीतने का रिकॉर्ड भारत के नाम है। इसके बाद वेस्टइंडीज का नंबर आता है तो तीसरे नंबर पर इंग्लैंड है जिसने सबसे ज्यादा मैच जीते हैं। चैंपियंस ट्रॉफी 2017 में 8 टीमों के बीच खेली गई थी।

उसमें 15 मैच खेले गए थे, लेकिन नॉकआउट स्टेज से पहले ग्रुप मैच में ऑस्ट्रेलिया बुरी तरह से हार गया और बाहर हो गया। ग्रुप स्टेज में ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैच खेले, जिसमें दो मैचों का कोई नतीजा नहीं निकला। एक मैच इंग्लैंड के खिलाफ था और ऑस्ट्रेलिया ये मैच हार गया।

बॉक्सिंग डे टेस्ट में इतिहास रच सकते हैं केएल राहुल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। अभी तक दोनों टीमों के बीच तीन टेस्ट मैच खेले जा चुके हैं, जिनमें टीम इंडिया के बल्लेबाजों को रन बनाने के लिए संघर्ष करते हुए देखा गया। वहीं इस टेस्ट सीरीज में भारत के लिए ओपन कर रहे केएल राहुल की स्थिति अन्य के मुकाबले काफई ठीक है। पिछले 3 टेस्ट मैचों में राहुल ने भारत की तरफ से अब तक सबसे ज्यादा रन बनाए हैं और विषम परिस्थिति में वो गेंदबाजों के खिलाफ जमकर जूझते हैं। केएल राहुल ने भारत के लिए खेले पिछले 3 टेस्ट मैच में हालांकि, शतक तो नहीं लगाया। लेकिन बिना कोई शतक लगाए भी उन्होंने 235 रन बनाए हैं। सबसे ज्यादा रन बनाने वाले भारतीय बल्लेबाजों की लिस्ट में पहले स्थान पर हैं। अब भारत को चौथा टेस्ट मैच मेलबर्न में खेला है और यहां पर केएल राहुल से भी अच्छी पारी की उम्मीद सबको जरूर होगी। वहीं अगर इस टेस्ट मैच में केएल राहुल शतक लगा देते हैं तो वो इतिहास रच देंगे। बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच में भारत की तरफ से सबसे ज्यादा शतक लागने वाले बल्लेबाज बन जाएंगे। बॉक्सिंग डे टेस्ट में अब तक सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में केएल राहुल सचिन तेंदुलकर और अंजिक्य रहाणे के साथ संयुक्त रूप से पहले नंबर पर हैं।

तेंदुलकर और रहाणे ने भारत के लिए बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच में दो-दो शतक लगाए थे। और राहुल के नाम भी दो शतक दर्ज हैं। अब मेलबर्न में अगर राहुल शतक ठोक देते हैं तो वो भारत की तरफ से बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच में सबसे ज्यादा शतक लागने वाले खिलाड़ी बन जाएंगे।

भारत 'इस्तेमाल' की हुई अभ्यास पिचों से नाखुश

मेलबर्न (एजेंसी)। भारतीय टीम ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे टेस्ट मैच से पूर्व अभ्यास पिचों पर असंतोष जताया और रोहित शर्मा के घुटने पर लगी चोट के लिए पिच के असमान उछाल को जिम्मेदार ठहराया है लेकिन एमसीजी (मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड) के क्यूरेटर मैट पेज ने पिचों का बचाव करते हुए कहा कि इसमें 'मानक प्रोटोकॉल' का पालन किया गया। सहायक स्टाफ के सदस्य दयानंद गरानी के थ्रोडाउन को खेलने की कोशिश करते हुए रोहित के बाएं घुटने में सूजन आ गई और उन्होंने इसके बाद रविवार को नेट पर अभ्यास नहीं किया। टीम पता चला कि रात को कप्तान के पैर की सूजन पर बर्फ लगानी पड़ी और टीम के 'थिंक टैंक' ने इसके लिए पिच के असमान उछाल को जिम्मेदार ठहराया। भारतीय टीम ने दो महीने पहले अपना ट्रेनिंग कार्यक्रम भेजा था लेकिन एमसीजी क्यूरेटर टेस्ट मैच से तीन दिन पहले ही नई अभ्यास पिच देने की मानक संचालन प्रक्रिया पर अड़े रहे। चौथा टेस्ट 26 दिसंबर से शुरू होगा। भारत को मुख्य पिच जैसी पिच क्यों नहीं मिली, इस बारे में पेज ने संवाददाताओं से कहा, ''हम तीन दिन पहले यहां पिच तैयार करते हैं। अगर टीम उससे पहले आकर खेलती हैं तो उन्हें वही पिचें मिलेंगी जो हमारे पास उपलब्ध हैं।''इस कदम का बचाव करते हुए पेज ने कहा, ''इसलिए आज हम नई पिचों पर हैं।

मोहम्मद शमी की फिटनेस पर बीसीसीआई ने दिया अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ऑस्ट्रेलिया दौरे पर नहीं जाएंगे। दरअसल, बीसीसीआई ने सोमवार को इस तेज गेंदबाज की फिटनेस पर जानकारी दी और उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अगले दो टेस्ट के लिए अनफिट घोषित किया। हाल ही में तीसरे टेस्ट मैच के बाद कप्तान रोहित शर्मा ने राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी के अधिकारियों से शमी की फिटनेस पर स्थिति स्पष्ट करने कहा था और अब भारतीय बोर्ड ने उन्हें अनफिट करार दिया है।

शमी को घुटने की चोट के कारण बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए 18 सदस्यीय भारतीय टीम में शामिल नहीं किया गया था। शमी पिछले साल वनेड वर्ल्ड कप के बाद से भारतीय टीम से बाहर चल रहे हैं और उन्होंने रणजी ट्रॉफी के जरिए मैदान पर वापसी की थी। शमी घरेलू क्रिकेट में खेल रहे हैं और बीसीसीआई की मेडिकल टीम लगातार उन पर नजरें रखी हुई थी।

बीसीसीआई ने इस बात की पुष्टि की है कि घुटने की चोट के कारण शमी लंबे समय से टीम से बाहर हैं और उन्हें शमी के जल्द पूरी तरह स्वस्थ होने की उम्मीद है। बोर्ड ने शमी की फिटनेस पर जानकारी देते हुए कहा कि, बोर्ड की मेडिकल टीम भारतीय तेज गेंदबाज शमी के साथ करीब से काम कर रही थी जिससे वह जल्द चोट से उबर सकें। शमी टखने की चोट से पूरी तरह उबर चुके थे। शमी ने रणजी ट्रॉफी में मध्यप्रदेश के खिलाफ बंगाल के लिए 43 ओवर गेदंबाजी की। इसके अलावा उन्होंने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के सभी 9 मैच खेले, जहां वह अतिरिक्त गेंदबाजी सत्र में शामिल हुए जिसेस टेस्ट मैच के लिए फिट हो सकें।

बुमराह से बचने का इस पूर्व दिग्गज के पास है उपाय

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 26 दिसंबर से बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच खेला जाएगा। अभी तक बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत दोनों टीमों के बीच तीन मैच खेले जा चुके हैं जिसमें अभी तक दोनों टीमें 1-1 की बराबरी पर है। वहीं इस सीरीज में ऑस्ट्रेलियाई टीम के लिए सबसे बड़ा जोखिम जसप्रीत बुमराह रहे हैं। बुमराह ने अभी तक तीनों टेस्ट मैचों में सबसे ज्यादा विकेट झटके हैं। बुमराह के खिलाफ जहां ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज बेबस नजर आए हैं वहीं पूर्व क्रिकेटर सामन कैटिच ने अपनी टीम के बल्लेबाजों के लिए मदद का हाथ बढ़ाया है।

कैटिज ने मेजबान टीम को सलाह दी है कि वे बुमराह के खिलाफ सफल होने के लिए स्ट्राइक रोटेट करने और मजबूत डिफेंस पर ध्यान लगाएं। कैटिच ने कहा कि बुमराह शायद ही कभी ढीली

गेंद फेंकते हैं इसलिए ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी को अपने पॉइंट ऑफ व्यू और स्ट्रैटजी पर काम करना चाहिए।

कैटिच ने एसईएन 1116 से कहा कि, मुझे पता है कि सभी बातें ज्यादा पॉजिटिव इरादे के बारे में हैं और मुझे लगता है कि ये सब ठीक है और ये निश्चित रूप से कुछ ऐसा है जिसका उन्हें ध्यान रखना चाहिए। लेकिन बुमराह जैसे खिलाी के खिलाफ इरादा सिर्फ उन्हें चौके मारने के बारे में नहीं है क्योंकि वह बहुत खराब गेंद नहीं फेंकता। उन्होंने कहा कि, इसलिए उस इरादे का एक बड़ा हिस्सा स्ट्राइक रोटेट करने और बहुत अच्छे डिफेंस में सक्षम होना चाहिए क्योंकि अगर आप दसवें ओवर के बाद वहां नहीं हैं तो आप किसी भी इरादे से नहीं खेल पाएंगे। ये इन सभी खिलाड़ियों के लिए चुनौती है।

भारतीय टीम में 20 विकेट लेने की क्षमता बहुत अच्छी नहीं है-पुजारा

मेलबर्न (एजेंसी)। चेतेश्वर पुजारा ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया का दौरा कर रही भारतीय टीम का गेंदबाजी आक्रमण उतना मजबूत नहीं है जो वह एक टेस्ट मैच में 20 विकेट ले सके तथा यह बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के अंतिम दो मैच में टीम के लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय होगा। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैच की श्रृंखला अभी 1-1 से बराबर है। अगले दो टेस्ट मैच मेलबर्न और सिडनी में खेले जाएंगे। भारत अभी तक गेंदबाजी में जसप्रीत बुमराह कर बहुत अधिक निर्भर रहा है। उन्होंने लाल और गुलाबी गेंद से अच्छा प्रदर्शन किया है लेकिन उन्हें दूसरे छोर से पर्याप्त सहयोग नहीं मिल पा रहा है। पुजारा ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा, ''मेरा सबसे बड़ा सवाल और थोड़ी चिंता का कारण यह है कि भारतीय गेंदबाजी थोड़ी कमजोर दिख रही है।'' उन्होंने कहा, ''बल्लेबाजी थोड़ी बेहतर है भले ही चोटी के पांच बल्लेबाज अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं लेकिन मध्यक्रम और निचले मध्यक्रम के बल्लेबाज जैसे कि रविंद्र जडेजा और नीतीश रेड्डी तथा यहां तक कि बुमराह और

आकाशदीप भी बल्ले से अपना योगदान दे रहे हैं।'' पुजारा ने कहा, ''अब जबकि गेंदबाजी कमजोर है तो फिर टीम संयोजन क्या होगा। यह सबसे बड़ा सवाल है क्योंकि आप नीतीश को बाहर नहीं कर सकते, जडेजा को बाहर नहीं कर सकते, तो फिर टीम का संयोजन क्या होगा।'' इस बल्लेबाज को लगता है कि नीतीश रेड्डी और रविंद्र जडेजा चौथे और पांचवें गेंदबाज की भूमिका अच्छी तरह से नहीं निभा पा रहे हैं। उन्होंने कहा, ''रविचंद्रन अश्विन ने संन्यास ले लिया है और मुझे नहीं लगता कि हम मेलबर्न में दो स्पिनर के साथ उतरेंगे। ऐसे में आप अपनी गेंदबाजी को कैसे मजबूत करेंगे। क्योंकि तीनों तेज गेंदबाज अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं लेकिन चौथे और पांचवें गेंदबाज के रूप में नीतीश और जडेजा से उन्हें पर्याप्त सहयोग नहीं मिल रहा है। अगर आप इन दोनों को जोड़ कर देखते हैं तो गेंदबाजी बहुत अच्छी नजर नहीं आती है।'' पुजारा ने कहा, ''हमें इस पर विचार करना होगा क्योंकि अगर आप टेस्ट मैच जीतना चाहते हैं तो आपको 20 विकेट लेने होंगे तथा हमारी 20 विकेट लेने की क्षमता अच्छी नहीं है। हमारे अन्य गेंदबाज सहयोगी की अपनी भूमिका अच्छी तरह से नहीं निभा पा रहे हैं। इसलिए हमें इस विभाग में जल्द से जल्द सुधार करना होगा तथा यह कैसा होगा मैं नहीं जानता लेकिन यह बड़ा सवाल है।

भारत सरकार

पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न
अटल बिहारी वाजपेयी जी
की 100वीं जन्म जयंती के
अवसर पर

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

₹ 44,600 करोड़ लागत की देश की पहली

केन-बेतवा नदी जोड़ो राष्ट्रीय परियोजना का

शिलान्यास

तथा

ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सौर परियोजना का लोकार्पण

1153 अटल ग्राम सुशासन भवनों का भूमिपूजन

माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की स्मृति में
स्टाम्प और सिक्का जारी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

के कर-कमलों
द्वारा

परियोजनाओं के लाभ

केन-बेतवा नदी जोड़ो राष्ट्रीय परियोजना

- मध्यप्रदेश के 10 जिले छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़, निवाड़ी, दमोह, शिवपुरी, दतिया, रायसेन, विदिशा और सागर के 8.11 लाख हेक्टेयर क्षेत्र एवं उत्तरप्रदेश के 2.51 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को मिलेगी सिंचाई सुविधा।परियोजना से कुल 65 लाख परिवारों को मिलेगी पेयजल की सुविधा।
- जल विद्युत परियोजनाओं से हरित ऊर्जा में 130 मेगावॉट का योगदान एवं औद्योगिक इकाइयों को पर्याप्त जल आपूर्ति से औद्योगिक विकास और रोज़गार को मिलेगा बढ़ावा।
- चंदेल कालीन लगभग 42 पुरातन तालाबों का होगा विकास एवं पुनर्निर्माण।
- दौधन बांध के निर्माण से बाढ़ का बेहतर प्रबंधन होगा संभव।

ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सौर परियोजना

- 518 मेगावॉट क्षमता की यह परियोजना विश्व की सबसे बड़ी फ्लोटिंग परियोजनाओं में से एक है।
- परियोजना से कृषि एवं उद्योग हेतु उपयोगी भूमि की बचत होगी।
- जल संरक्षण एवं हरित ऊर्जा उत्पादन से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि को रोकने में सहयोग मिलेगा।

अटल ग्राम सुशासन भवन

- अटल ग्राम सुशासन भवनों का निर्माण ग्राम पंचायतों को स्थायी भवन की सुविधा प्रदान करेगा।
- ग्राम पंचायतों को प्रशासनिक कार्य करने, बैठकों के आयोजन एवं रिकॉर्ड प्रबंधन में सहायता मिलेगी।

गरिमामयी उपस्थिति

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल, मध्यप्रदेश

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

सी.आर. पाटिल
केंद्रीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय

D11136/24

25 दिसम्बर, 2024 | पूर्वाह्न 11:00 बजे | खजुराहो, जिला छतरपुर

सीधा प्रसारण http://pmindiawebcast.nic.in DD News @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।